हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार, 9 नवंबर 2025

12 गुरु तेग बहादुर के शहीदी दिवस पर 51 ने...

12 रेल अंडरपास महापंचायत ने जीतूवाला ओवरब्रिज...

CHINAR FABRICS
Chinar Mill Showroom
चिनार मील शोरूम
नजदीक बासिया भवन, हांसी रोड, भिवानी M.: 70567-95900
महाबचत छूट
1 जैकेट 1599/- 799/- only
1 ब्लेजर 3599/- 1499/- only
3 पीस सूट 5999/- 2999/- only

डिग्री केवल दस्तावेज नहीं, बल्कि जिम्मेदारी का प्रतीक एवं समाज के प्रति एक वचन

राज्यपाल ने स्नातक व स्नातकोत्तर के 300 विद्यार्थियों को वितरित की डिग्रियां

शिक्षा के साथ-साथ नैतिक मूल्यों को भी जीवन में धारण करें विद्यार्थी: घोष

भिवानी। टीआईटीएस के दीक्षांत समारोह में मेधावी विद्यार्थी प्रशांत गौड़ को डिग्री भेंट करते संस्था के निदेशक बीके बेहेरा व आरके डालमिया और राज्यपाल प्रोफेसर अशिम का अभिनंदन करते आयोजक।

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

दा टेक्नोलॉजिकल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्सटाइल एंड साइंसेज (टीआईटीएस) का शनिवार को दीक्षांत समारोह हुआ, जिसमें हरियाणा के महामहिम राज्यपाल प्रोफेसर अशिम कुमार घोष ने बतौर मुख्यतिथि शिरकत की।

दीक्षांत समारोह का राज्यपाल प्रोफेसर घोष ने द्वीप प्रज्ज्वलन करके शुभारंभ किया। इस मौके पर राष्ट्र गीत गाया गया। राज्यपाल प्रोफेसर घोष ने विभिन्न विभागों के स्नातक एवं स्नातकोत्तर के 300 विद्यार्थियों को उपाधियां प्रदान की। राज्यपाल प्रोफेसर घोष ने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे शिक्षण के साथ-साथ नैतिक मूल्यों को भी जीवन में धारण करें और समाज व राष्ट्र की समृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं। उन्होंने कहा कि डिग्री केवल एक दस्तावेज नहीं, बल्कि ये जिम्मेदारी का प्रतीक और समाज के प्रति एक वचन है। समारोह में राज्यपाल प्रोफेसर घोष की पत्नी मित्रा घोष, रोहतक एमडी यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रोफेसर राजबीर सिंह, सीबीएलयू की कुलपति प्रोफेसर दीप्ति धर्माणी मौजूद रहीं।

टीआईटी का ध्येय केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं: डालमिया

संस्थान के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के अध्यक्ष आरके डालमिया व निदेशक प्रोफेसर बीके बेहेरा ने अतिथियों का अभिनंदन किया। टीआईटीएस के दीक्षांत समारोह में राज्यपाल प्रोफेसर अशिम कुमार घोष ने बतौर मुख्यतिथि शिरकत कर लगभग 300 विद्यार्थियों को डिग्रियां प्रदान की। उन्होंने कहा कि हरियाणा जैसे प्रगतिशील राज्य में टीआईटीएस जैसी संस्थाएं राज्य की औद्योगिक क्षमता व मानव संसाधन को सशक्त बना रही हैं, भविष्य के भारत को ऐसे ही संस्थानों की आवश्यकता है। राज्यपाल प्रोफेसर घोष ने कहा कि विद्यार्थी केवल रोजगार के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की भावना से कार्य करें। विधायक घनश्यामदास सर्राफ ने कहा कि भिवानी का उद्योग जगत में नाम रहा है, वर्तमान में भी भिवानी की कपड़ा उद्योग में अलग पहचान है। एमडीयू के कुलपति प्रोफेसर राजबीर सिंह ने कहा टीआईटी महर्षि दयानन्द विवि परिवार का गौरव है। संस्थान के अध्यक्ष आरके डालमिया ने कहा कि टीआईटी का ध्येय केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं हैं। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर बीके बेहेरा ने कहा कि ये गौरव का विषय है कि टीआईटीएस ने शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार को एक सूत्र में पिरोया है।

कार्यक्रम में ये रहे मौजूद

कार्यक्रम के दौरान एसएसपी सुमित कुमार, एडीसी दीपक बाबूलाल करवा, तहसीलदार जयबीर सिंह, डीएसपी अनूप कुमार व महेश कुमार, जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. निर्मल दहिया, टीआईटी स्कूल के प्राचार्य डॉ. डीपी कौशिक, प्रमोद कुमार, ऐश्वर्या शर्मा, डॉ. मोनिका शर्मा, डॉ. सतीश, डॉ. अखिल, डॉ. यामिनी, डॉ. अन्नू, डॉ. निधि, डॉ. अनिल यादव, डॉ. नंदा, डॉ. चारूमणि, डॉ. रोहित, राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री अवार्डी मास्टर लक्ष्मण गौड़ आदि मौजूद रहे।

भिवानी आगमन पर राज्यपाल का चंद्रशेखर आजाद ओपन ग्रुप ने किया स्वागत

भिवानी। राज्यपाल प्रोफेसर घोष के साथ चंद्रशेखर आजाद ओपन ग्रुप हरियाणा राज्य भारत स्काउट्स एंड गाइड्स।

भिवानी। हरियाणा के राज्यपाल असीम कुमार घोष के भिवानी आगमन पर चंद्रशेखर आजाद ओपन ग्रुप द हरियाणा राज्य भारत स्काउट्स एंड गाइड्स ने उनका भव्य स्वागत किया। राज्यपाल ने ग्रुप की नशा मुक्त हरियाणा-स्वस्थ हरियाणा मुहिम की सराहना की और भारत स्काउट्स एवं गाइड्स के 75 वर्ष पूरे होने पर सभी रोवर्स और रेंजर्स को बधाई दी। राज्यपाल के स्वागत के लिए चंद्रशेखर आजाद ओपन ग्रुप ने विशेष रूप से बैंड और सम्मान गार्ड की टुकड़ी तैयार की। ग्रुप लीडर सागर सज्जन सिंह, सीनियर रोवर नितेश कुमार और बैंड कमांडर विजय अहीरवाल के नेतृत्व में टुकड़ी ने उन्हें सलामी दी। इस दौरान ग्रुप कोर्डिनेडर राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री अवार्डी लक्ष्मण गौड़, सह ग्रुप लीडर अमित कुमार, एवं गाइड/रेंजर्स कैप्टन पुष्पा देवी ने पुष्पगुच्छ भेंट कर राज्यपाल प्रोफेसर घोष का गर्मजोशी से स्वागत किया और राज्यपाल ने चंद्रशेखर आजाद ओपन ग्रुप द्वारा समाज कल्याण के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। युवा पीढ़ी को सही दिशा में ले जाने और उन्हें सामाजिक बुराइयों से दूर रखने के लिए इस तरह की पहल अत्यंत आवश्यक हैं।

समारोह में इन्हें किया सम्मानित

समारोह में संस्थान की तरफ से राज्यपाल घोष को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। घोष ने विभिन्न विभागों के स्नातक एवं स्नातकोत्तर के 300 विद्यार्थियों को डिग्रियां प्रदान की। दीक्षांत समारोह में संस्थान के एलुमनी एवं विभिन्न संस्थानों में उच्च मुकाम हासिल करने वाले वर्धमान टेक्सटाइल्स बद्दी के अध्यक्ष आईएमजेएस सिद्धू, जैन कॉर्ड्स चेयरमैन अनिल जैन, निप्पॉन डेटा सिस्टम्स संस्थापक एवं सीईओ हरीश सर्राफ और कलरेंट के प्रबंध निदेशक सुभाष भार्गव को राज्यपाल ने टीआईटीएस संस्थान की तरफ से सम्मानित किया। राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री अवार्डी मास्टर लक्ष्मण गौड़ के नेतृत्व में राज्यपाल प्रोफेसर घोष को स्काऊट एंड गाइड्स की टुकड़ी ने पायलेट किया।

अटल बिहारी वाजपेई के 100वें जन्म दिवस पर कार्यक्रम

रागिनी कलाकारों ने बांधा समां ग्रामीणों ने जमकर उठाया लुत्फ

तोशाम। गांव दुल्हेड़ी में युवा स्वच्छता एवं जनसेवा समिति द्वारा संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के 100वें जन्म दिवस मनाया। इस उपलक्ष्य में आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम के दूसरे दिन शनिवार को दूर दराज क्षेत्र से पहुंचे रागिनी कलाकारों ने प्रस्तुति देकर ग्रामीणों का भरपूर मनोरंजन करवाया। वहीं गांव के राजकीय विद्यालय की नन्ही मुन्नी बालिकाओं ने शानदार हरियाणवी नृत्य की प्रस्तुति देकर उपस्थित लोगों का मन मोह लिया। रागिनी कलाकार अनिल बाडया ने हरियाणा मैं जिला भिवानी दुल्हेड़ी गांव से युवा स्वच्छता समिति कर रही जनसेवा का काम से...रागिनी के माध्यम से युवा स्वच्छता एवं जनसेवा समिति की खूबियां गिनवाई।

हास्य रस से ओत-प्रोत रागिनियां सुनाईं

वहीं रागिनी गायक कलाकार दीपक चिड़िया ने भी अपनी रागिनी के माध्यम से उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम के दौरान नन्ही मुन्नी बच्चियों ने विभिन्न सामूहिक हरियाणवी नृत्य प्रस्तुत कर उपस्थित श्रोताओं को कार्यक्रम में डटे रहने पर मजबूर कर दिया। वहीं मंच संचालन कर रहे हरियाणवी गायक बलवान सिंह बबली दूल्हेड़ी वाले ने कार्यक्रम में निरंतर संतुलन बनाए रखा। मौके पर सभी अतिथियों का आयोजन समिति ने फूलमाला, पगड़ी पहनाकर स्वागत किया तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर समिति के प्रधान पवन सैनी, एडवोकेट सज्जन अग्रवाल, सत्यनारायण अग्रवाल, साधुराम जांगड़ा, नत्थूराम जांगड़ा, सरपंच रामेश्वर, रामेश्वर जांगड़ा, बीरसिंह राजपूत, सोनू, समाजसेवी राजू सैनी, दिलबाग, बलवान मौजूद रहे।

वर्षा लाड बनी सेना में लेफ्टिनेंट परिजनों में खुशी की लहर

बाढ़ड़ा। आर्मी की मेडिकल कोर में नवचयनित लेफ्टिनेंट वर्षा लाड को बैज लगाते उनके माता पिता।

बाढ़ड़ा। गांव लाड निवासी विजन इंटरनैशनल स्कूल के प्रबंधक रोहताश मान की भतीजी वर्षा लाड ने इंडियन आर्मी की मेडिकल विंग में लेफ्टिनेंट पद पर चुनी गई है। भूतपूर्व सैनिक की बेटी की सफलता पर परिजनों में खुशी की लहर है और उनको बधाई देने वालों का तांता लगा हुआ है। गांव लाड निवासी भूतपूर्व सैनिक की पुत्री वर्षा ने प्राथमिक शिक्षा लाड के जीएम उच्च विद्यालय से प्राप्त की तथा उसके बाद इंडियन आर्मी में कमीशन प्राप्त किया। वर्षा दिल्ली के आरआर चिकित्सा संस्थान में तीन वर्ष के चिकित्सा प्रशिक्षण के बाद अब आर्मी फोर्सेस मेडिकल इंस्टियूट पूना में लेफ्टिनेंट पद पर चयनित हुई हैं। वर्षा के पिता महेंद्र सिंह ने बताया कि उनका पूरा परिवार सेना से जुड़ा है और वर्षा भी बाल्यकाल से ही सेना में भर्ती होना चाहती थी और स्वयं ही बारहवीं कक्षा के बाद आर्मी मेडिकल कोर में कमीशन पाकर भर्ती हुई। उनके नक्षेदकम पर चलते हुए उनके इकलौते भाई भी नीट कोर्स कर रहे हैं। समाजसेवी रोहताश मान ने कहा कि बेटी वर्षा ने अपनी मेहनत से इस क्षेत्र का नाम रोशन किया है। उन्होंने नवचयनित लेफ्टिनेंट वर्षा कुमारी सहित सभी परिवारजनों को गुरुजनों को बधाई दी।

खाद पदार्थों के सैंपलों की सुनवाई में लाखों का लगाया जुर्माना

चरखी दादरी। अतिरिक्त उपायुक्त दीपक बाबूलाल कारवा ने खाद्य पदार्थों, लाइसेंस व रजिस्ट्रेशन से संबंधित केसों की सुनवाई की और विभिन्न केसों पर निर्णय दिया। उन्होंने अवैध, बिना लाइसेंस व पंजीकरण के खाद्य पदार्थ बेचने को लेकर दो लाख 66 हजार 987 रुपये का जुर्माना लगाया। अतिरिक्त उपायुक्त ने बताया कि मैसर्ज अशोक कुमार गोयल, मैसर्ज शिव मिष्ठान भंडार, मैसर्ज शिव मिष्ठान भंडार कादमा, मिठाई, दुध व घी के केसों में अवमानक फैट मिल्क के केस में कुल मिलाकर दो लाख 66 हजार 987 रुपये का जुर्माना रुपये लगाया हैं। वहीं अन्य खाद्य पदार्थों में मैसर्ज मनोज करियाणा स्टोर, मैसर्ज शिटी कन्फेशनरी, सैनी स्वीटस शॉप, प्रेम ड़ायरी, प्रोडक्ट के केस व अन्य लाइसेंस और रजिस्ट्रेशन नहीं करवाने पर 31 हजार 900 रुपये जुर्माना लगाया। एडीसी ने संबंधित विक्रेताओं को भविष्य में रजिस्ट्रेशन व लाइसेंस समय अनुसार नवीनीकरण करवाने की चेतावनी दी। सुनवाई के दौरान खाद्य सुरक्षा अधिकारी मौजूद रहे। उन्होंने आमजन से आह्वान किया कि कोई खाद्य पदार्थ बनाने, बेचने, मैन्युफैक्चरिंग, स्टोर करने, पैकिंग

दलीप की पोस्टमार्टम व मोबाइल डंप रिपोर्ट मिली

मोबाइल डंप रिपोर्ट का एनालिस कर आरोपियों तक पहुंचने को पुलिस जोड़ रही संभावित कड़ियां

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहल

बहल निवासी किसान दलीप की हत्या के मामले में पुलिस को जिन मोबाइल डंप और पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार था, वो शनिवार को मिल गई है। हालांकि पुलिस इन रिपोर्ट्स को जांच की गोपनीयता के चलते सार्वजनिक नहीं कर रही है। इन दोनों रिपोर्टों के मिलने के बाद पुलिस को उम्मीद है कि वो इस ब्लाइंड मर्डर केस का पर्दाफाश करने में सफल होगी। सोमवार रात को हुए हत्याकांड के बाद से ही पुलिस के अलावा सीआईए की टीमें इस केस को सुलझाने के लिए दिन रात एक कर केस से जुड़े हर पहलू की गहनता से जांच कर रही है। पुलिस ने मृतक के परिजनों द्वारा शक के आधार पर बताए गए दो पुरुष और एक महिला के अलावा अन्य लोगों को जांच में शामिल किया है, ताकि इस हत्याकांड का सही सुराग लगाया जा सके। पुलिस के साथ साथ कस्बे के ग्रामीणों के लिए भी यह घटना एक पहली बनी हुई है क्योंकि दलीप एक सौम्य स्वभाव का व्यक्ति था और उसकी कभी किसी से ऐसी रंजिश नहीं थी कि उसका बदला जान लेकर लिया जाए। मृतक दलीप की खेत से घर और घर से खेत की दिनचर्या रही थी, ऐसे में बड़ा सवाल यह है कि दलीप की हत्या के पीछे अपराधी की क्या मंशा रही और मकसद रहा होगा, जिनको उसकी जान लेनी पड़ी। वहीं मृतक के परिजनों ने बताया कि वो भी लगातार पुलिस से संपर्क में है और पुलिस ने उनको दो तीन दिन का समय और इंतजार करने को कहा है। वे अभी पुलिस की जांच पर यकीन करते हुए उम्मीद लगाए बैठे है कि पुलिस मामले का खुलासा करेगी और उनको न्याय मिलेगा। परिजनों का कहना है कि पुलिस उनसे कई बार पूछताछ कर दलीप के आने जाने के समय, उनसे मिलने वाले लोगों और घटना की दिन के सभी विषयों को लेकर जानकारी ले चुकी है।

मृतक किसान दलीप का फाइल फोटो।

- परिजनों ने बताया कि वो भी लगातार पुलिस से संपर्क में

रिपोर्ट मिल चुकी

वहीं बहल थाना प्रभारी संजय कुमार ने बताया कि शनिवार को पुलिस को मृतक दलीप की पोस्टमार्टम व मोबाइल डंप रिपोर्ट मिल चुकी है। हम मोबाइल डंप रिपोर्ट को एनालिस कर आरोपियों तक पहुंचने के लिए संभावित कड़ियां जोड़ रहे है।

To locate your nearest store and know more on 8147349242. Buy online at tanishq.co.in or Download our App *Conditions apply. Scan the QR code to find the nearest Tanishq store
शोरुम :- विजय नगर, केएम सीनियर सेकेण्डरी स्कूल के पास, हांसी गेट, भिवानी टेली. 77290-93000

म्यूचुअल फंड में निवेश करते समय, आपको ग्रोथ ऑप्शन और डिविडेंड ऑप्शन में से एक का चयन करना होता है। ये दोनों ऑप्शन आपके निवेश के उद्देश्य और वित्तीय लक्ष्यों पर निर्भर करते हैं।

म्यूचुअल फंड के ग्रोथ या डिविडेंड ऑप्शन में से बेहतर क्या और क्यों?

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

निवेशकों के लिए क्या रहेगा फायदे का सौदा ग्रोथ और डिविडेंड किसमें मिलेगा ज्यादा फायदा, फैसला गलत हो जाए तो कैसे स्विच करें

म्यूचुअल फंड में निवेश करते समय कई बार निवेशकों को यह कनफ्यूजन हो सकता है कि किसी स्कीम का ग्रोथ ऑप्शन चुनें या डिविडेंड ऑप्शन बेहतर रहेगा? सही ऑप्शन का चुनाव आपके रिटर्न को बढ़ा सकता है, जबकि गलत सेलेक्शन से आपका मुनाफा घट सकता है। यही वजह है कि समझदारी से लिया गया फैसला आपके इनवेस्टमेंट की ग्रोथ को कई गुना बढ़ा सकता है। आमतौर पर ग्रोथ विकल्प बेहतर होता है, क्योंकि यह लंबी अवधि में चक्रवृद्धि ब्याज के कारण अधिक धन बनाता है, जबकि डिविडेंड विकल्प उन निवेशकों के लिए बेहतर है जो नियमित आय चाहते हैं। ग्रोथ में, फंड लाभ को फिर से निवेश करता है, जिससे निवेश का मूल्य समय के साथ बढ़ता है, जबकि डिविडेंड में, फंड आय वितरित करता है, जिससे चक्रवृद्धि ब्याज का प्रभाव कम हो जाता है। आइए इस रिर्पोट में जानते हैं दोनों ऑप्शंस का फर्क, फायदे और स्विच करने के नियम।

ग्रोथ ऑप्शन के फायदे

म्यूचुअल फंड के ग्रोथ ऑप्शन में आपके निवेश पर जो भी मुनाफा बनता है, वो आपको कैश में नहीं दिया जाता है, बल्कि, वह पैसा दोबारा उसी म्यूचुअल फंड फिर से इनवेस्ट कर दिया जाता है। इसका फायदा यह होता है कि आपके मुनाफे पर भी मुनाफा जुड़ने लगता है, जिससे कंपाउंडिंग का बेनिफिट मिलता है। समय के साथ कंपाउंडिंग की यह ताकत आपकी पूंजी को तेजी से बढ़ाने में मदद करती है. यही वजह है कि ग्रोथ ऑप्शन में फंड की नेट एसेट वैल्यू यानी एनएवी ज्यादा तेजी से बढ़ती है।

डिविडेंड ऑप्शन क्या है

पहले जिसे डिविडेंड ऑप्शन कहा जाता था, उसे अब 'इनकम डिस्ट्रीब्यूशन कम कैपिटल विदड्रॉल' ऑप्शन यानी आईडीसीडब्ल्यू का नाम दे दिया गया है। इसमें फंड से मिलने वाला मुनाफा समय-समय पर निवेशकों में बांट दिया जाता है। हालांकि पेआउट की यह फ्रीक्वेंसी फिक्स नहीं होती, लेकिन जब भी ऐसा भुगतान किया जाता है, फंड की एनएवी घट जाती है। इसका मतलब है कि लंबे समय में आपकी पूंजी उतनी तेजी से नहीं बढ़ पाती जितनी ग्रोथ ऑप्शन में बढ़ सकती है। सेबी ने डिविडेंड ऑप्शन का नाम बदलकर आईडीसीडब्ल्यू इसलिए रखा, ताकि निवेशकों को यह समझ में आए कि इस पेआउट में कुछ हिस्सा आपकी अपनी पूंजी से निकलता है. यह कोई गारंटीड इनकम जैसा

विकल्प नहीं हैं।

कौन सा विकल्प सही

ग्रोथ और डिविडेंड ऑप्शन में आपके लिए कौन सा विकल्प सही है, यह पूरी तरह आपके आर्थिक लक्ष्य और निवेश के मकसद से तय होता है। अगर आप रिटायर्ड हैं या किसी वजह से रेगुलर इनकम (आपके लिए जरूरी है, तो आईडीसीडब्ल्यू ऑप्शन आपके लिए बेहतर हो सकता है, लेकिन अगर आप लंबी अवधि के लिए पैसे लगा रहे हैं और चाहते हैं कि आपका पैसा लगातार बढ़ता रहे, तो ग्रोथ ऑप्शन सही रहेगा। लंबे समय में देखा जाए तो ग्रोथ ऑप्शन आमतौर पर बेहतर रिटर्न देता है, क्योंकि इसमें कंपाउंडिंग का फायदा मिलता है। वहीं, आईडीसीडब्ल्यू ऑप्शन उन निवेशकों के लिए है जो समय-समय पर पैसा निकालना चाहते हैं और रेगुलर इनकम चाहते हैं।

गलत विकल्प चुन लिया हो तो क्या करें?

म्यूचुअल फंड में सही ऑप्शन चुनना उतना ही जरूरी है जितना सही फंड चुनना. दोनों की अपनी-अपनी खूबियां और सीमाएं हैं।

कई निवेशक शुरुआत में रेगुलर इनकम पाने के लिए या किसी कनफ्यूजन की वजह से आईडीसीडब्ल्यू चुन लेते हैं, लेकिन बाद में उन्हें महसूस होता है कि अगर उनका पूरा मुनाफा फंड में ही दोबारा निवेश होता, तो लंबे समय में बेहतर रिटर्न मिल सकता था। ऐसा होने पर निवेशक अपने पैसों को ग्रोथ ऑप्शन में स्विच कर सकते हैं, लेकिन उससे पहले म्यूचुअल फंड पर लागू होने वाले टैक्स के नियमों और एग्जिट लोड के असर को समझना जरूरी है।

आईडीसीडब्ल्यू से ग्रोथ ऑप्शन में कैसे स्विच करें

अगर आप अपने म्यूचुअल फंड इनवेस्टमेंट को डिविडेंड या आईडीसीडब्ल्यू ऑप्शन से ग्रोथ ऑप्शन में स्विच करना चाहते हैं, तो इसके लिए एक फॉर्म भरना होता है। फंड स्विचिंग की यह प्रॉसेस आमतौर पर 24 घंटे में पूरी हो जाती है, लेकिन याद रखें कि इस तरह का स्विच रिडेम्पशन और नई खरीदारी दोनों ही माना जाता है। इसका मतलब है कि आपको यूनिट होल्ड करने की अवधि के हिसाब से एग्जिट लोड और कैपिटल गेन्स टैक्स देना पड़ सकता है। इसलिए फैसला करने से पहले पूरी टैक्स देनदारी को जरूर समझ लें।

निवेश का उद्देश्य लंबी अवधि के लिए पूंजी की वृद्धि

डिविडेंड : डिविडेंड का भुगतान नहीं किया जाता है, बल्कि इसे फंड में पुनर्निवेश किया जाता है।
निवेश की वृद्धि : निवेश की वृद्धि होती है, जिससे आपका मूल निवेश बढ़ता है।
कर लाभ : ग्रोथ ऑप्शन में निवेश पर कर लाभ मिलता है, क्योंकि डिविडेंड का भुगतान नहीं किया जाता है।

समझदारी
बिजनेस डेस्क

डिविडेंड ऑप्शन

- **निवेश का उद्देश्य :** नियमित आय प्राप्त करना।
- **डिविडेंड :** डिविडेंड का भुगतान किया जाता है, जिससे आपको नियमित आय मिलती है।
- **निवेश की वृद्धि :** निवेश की वृद्धि कम होती है, क्योंकि डिविडेंड का भुगतान किया जाता है।
- **कर लाभ :** डिविडेंड ऑप्शन में निवेश पर कर लाभ नहीं मिलता है, क्योंकि डिविडेंड का भुगतान किया जाता है।

कब ग्रोथ ऑप्शन चुनें

- **लंबी अवधि के निवेशक :** यदि आप लंबी अवधि के लिए निवेश करना चाहते हैं और पूंजी की वृद्धि करना चाहते हैं।
- **नियमित आय की आवश्यकता नहीं :** यदि आपको नियमित आय की आवश्यकता नहीं है और आप अपने निवेश को बढ़ाना चाहते हैं।

कब डिविडेंड ऑप्शन चुनें

- नियमित आय की आवश्यकता : यदि आपको नियमित आय की आवश्यकता है और आप अपने निवेश से आय प्राप्त करना चाहते हैं।
- अल्पकालिक निवेशक : यदि आप अल्पकालिक निवेश करना चाहते हैं और नियमित आय प्राप्त करना चाहते हैं।

गलत फंड चुनने से बचना चाहते हैं तो निवेश से पहले जान लें ये टिप्स

- बाजार में मौजूद 250 से ज्यादा ईटीएफ में से अपने लिए सही फंड चुनना आसान नहीं
- लक्ष्य और कुछ बातों को ध्यान में रखेंगे तो सही फंड में निवेश करना आसान हो जाएगा

अपने लिए सही फंड चुनना किसी निवेशक के लिए बड़ी चुनौती
अगर गलत ईटीएफ चुन लिया, तो उसका रिटर्न पर बुरा असर पड़ेगा

जानकारी
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड निवेशकों के बीच एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है। वजह साफ है। ईटीएफ बेहद कम खर्च में डायवर्सिफाइड पोर्टफोलियो बनाने का मौका देते हैं। इसके साथ ही उन्हें एक्सचेंज पर जाकर स्टॉक्स की तरह आसानी से खरीदा और बेचा जा सकता है, लेकिन बाजार में 250 से ज्यादा ईटीएफ मौजूद हैं। ऐसे में अपने लिए सही फंड चुनना किसी निवेशक के लिए बड़ी चुनौती हो सकता है। अगर गलत ईटीएफ चुन लिया, तो उसका आपके रिटर्न पर बुरा असर पड़ सकता है। अगर आप अपने निवेश के लिए सही ईटीएफ चुनना चाहते हैं, तो कुछ बातों पर ध्यान दें। इस रिपोर्ट में हम आपको बताने जा रहे हैं ऐसे की कुछ ऐसे ही टिप्स जो आपको सही फंड चुनने में मदद करेंगे।

आपका ईटीएफ किस इंडेक्स को ट्रैक करता है

हर ईटीएफ किसी न किसी इंडेक्स को ट्रैक करता है। यानी आप इनडायरेक्ट तौर पर उस इंडेक्स में शामिल कंपनियों या एसेट्स में निवेश कर रहे होते हैं। मसलन, अगर आपका ईटीएफ निफटी 50 या सेसेंक्स को फॉलो करता है, तो आप उनके जरिये देश की टॉप कंपनियों की हिस्सेदारी खरीद रहे होते हैं। इसलिए यह जानना बेहद जरूरी है कि आपका चुना हुआ ईटीएफ किस इंडेक्स से जुड़ा है और क्या वह आपके निवेश के उद्देश्य से मेल खाता है। सही इंडेक्स का चुनाव लंबे समय में बेहतर रिटर्न की दिशा तय करता है।

ट्रैकिंग एरर पर रखिए खास नजर

हर ईटीएफ कोशिश करता है कि वह अपने बेंचमार्क इंडेक्स को हूबहू फॉलो करे, लेकिन हर बार ऐसा संभव नहीं होता. इस छोटे फर्क को ही ट्रैकिंग एरर कहा जाता है। अगर यह एरर कम है, तो ईटीएफ अपने इंडेक्स के रिटर्न से काफी हद तक मेल खाता है। वहीं, अगर ट्रैकिंग एरर ज्यादा है, तो आपके रिटर्न उम्मीद से कम हो सकते हैं। इसलिए हमेशा ऐसे ईटीएफ को चुनना बेहतर रहता है, जिसका ट्रैकिंग एरर कम से कम हो।

लिक्विडिटी यानी खरीदना-बेचना कितना आसान

निवेश का मकसद सिर्फ रिटर्न पाना नहीं होता, बल्कि आपके पास जरूरत पड़ने पर पैसा निकालने की बेहतर सुविधा होनी भी जरूरी है। इसलिए ईटीएफ की लिक्विडिटी बेहद अहम होती है। अगर किसी ईटीएफ में रोजाना अच्छा कारोबार होता है, यानी खरीदने और बेचने वालों की संख्या काफी है, तो उसे कभी भी बेचना आसान रहेगा, लेकिन अगर फंड का ट्रेडिंग वॉल्यूम कम है, तो आपको जरूरत पड़ने पर कम समय में अपनी यूनिट्स बेचने में दिक्कत का सामना करना पड़ सकता है। हमेशा ऐसे ईटीएफ का चुनाव करें जिसे जरूरत पड़ने पर आसानी से खरीदा या बेचा जा सके।

ईटीएफ के प्राइस और एनएवी में फर्क को समझें

ईटीएफ की नेट एसेट वैल्यू (एनएवी) यह बताती है कि उसमें शामिल एसेट्स का मौजूदा मूल्य कितना है। आम तौर पर ईटीएफ का मार्केट प्राइस उसके एनएवी के आसपास होना चाहिए, लेकिन कई बार मार्केट प्राइस इससे काफी ऊपर या नीचे भी ट्रेड करता है। अगर ईटीएफ का प्राइस उसकी एनएवी से काफी ज्यादा है, तो आप जरूरत से ज्यादा पैसे चुका रहे हैं। इसलिए निवेश से पहले हमेशा देखें कि ईटीएफ की कीमत उसकी एनएवी के करीब हो, ताकि आपका पैसा सही वैल्यू पर निवेश किया जा सके।

एक्सपेंस रेशियो पर ध्यान देना न भूलें

हर ईटीएफ को चलाने के लिए मैनेजमेंट कॉस्ट लगती है, जिसे एक्सपेंस रेशियो कहा जाता है। इसका आंकड़ा पहली नजर में भले ही बेहद छोटा लगे, लेकिन लंबे समय में यह आपके रिटर्न पर बड़ा असर डाल सकता है। मिसाल के तौर पर अगर किसी ईटीएफ का एक्सपेंस रेशियो 0.05% है और दूसरे का 0.10%, तो शुरुआत में फर्क छोटा दिखेगा, पर साल दर साल यही फर्क आपके रिटर्न पर बड़ा असर डाल सकता है। इसलिए बाकी बातें समान रहने पर हमेशा उसी ईटीएफ का चुनाव करें, जिसका एक्सपेंस रेशियो कम हो। सही ईटीएफ का चुनाव करना किसी भी निवेशक के लिए बड़ा फैसला होता है, क्योंकि इसी से तय होता है कि आगे चलकर आपका निवेश कितना स्टेबल और फायदेमंद रहेगा।

सही फैसला लें

अगर आप ऊपर बताई गई बातों-बेंचमार्क इंडेक्स, ट्रैकिंग एरर, लिक्विडिटी, प्राइस-एनएवी डिफरेंस और एक्सपेंस रेशियो - को ध्यान में रखकर फंड चुनेंगे, तो सही फैसला लेना आसान होगा। याद रखें, सारे ईटीएफ एक जैसे नहीं होते। इसलिए जल्दबाजी में नहीं, बल्कि समझदारी के साथ सही ईटीएफ चुनें।

क्या है ईटीएफ

ईटीएफ (एक्सचेंज ट्रेडेड फंड) एक प्रकार का निवेश उत्पाद है जो शेयर बाजार में ट्रेड किया जाता है। यह एक म्यूचुअल फंड की तरह होता है, लेकिन इसे शेयर बाजार में ट्रेड किया जा सकता है जैसे कि शेयर।

ईटीएफ की विशेषताएं

1. **ट्रेडेबिलिटी :** ईटीएफ को शेयर बाजार में ट्रेड किया जा सकता है।
2. **डाइवर्सिफिकेशन :** ईटीएफ में विभिन्न प्रकार के शेयर, बॉन्ड, या अन्य सिक्योरिटीज शामिल होते हैं।
3. **लो कॉस्ट :** ईटीएफ की फीस आम तौर पर म्यूचुअल फंड की तुलना में कम होती है।
4. **ट्रांसपेरेंसी :** ईटीएफ के पोर्टफोलियो की जानकारी दैनिक रूप से उपलब्ध होती है।

ईटीएफ के प्रकार

1. **इक्विटी ईटीएफ :** ये ईटीएफ शेयर बाजार में निवेश करते हैं।
2. **बॉन्ड ईटीएफ :** ये ईटीएफ बॉन्ड में निवेश करते हैं।
3. **सेक्टोरल ईटीएफ :** ये ईटीएफ विशिष्ट क्षेत्रों में निवेश करते हैं।
4. **इंटरनेशनल ईटीएफ :** ये ईटीएफ विदेशी शेयर बाजार में निवेश करते हैं।
5. **गोल्ड ईटीएफ :** ये ईटीएफ सोने में निवेश करते हैं।

ईटीएफ के लाभ

1. **डाइवर्सिफिकेशन :** ईटीएफ में विभिन्न प्रकार के शेयर या सिक्योरिटीज शामिल होते हैं।
2. **लो कॉस्ट :** ईटीएफ की फीस आम तौर पर कम होती है।
3. ट्रेडेबिलिटी : ईटीएफ को शेयर बाजार में ट्रेड किया जा सकता है।
4. ट्रांसपेरेंसी : ईटीएफ के पोर्टफोलियो की जानकारी दैनिक रूप से उपलब्ध होती है।

ईटीएफ के जोखिम

1. **मार्केट जोखिम :** ईटीएफ के मूल्य में उतार-चढ़ाव हो सकता है।
2. **लिक्विडिटी जोखिम :** ईटीएफ की लिक्विडिटी कम हो सकती है।
3. **ट्रैकिंग एरर :** ईटीएफ का प्रदर्शन उसके अंडरलाइंग इंडेक्स के प्रदर्शन से भिन्न हो सकता है।

आय का मुख्य स्त्रोत आप खुद हैं या परिवार पर आपकी जिम्मेदारी तो यह सही कदम

कई बार बैंक सिर्फ अपने कमीशन के लिए भी लोन इंश्योरेंस बेचते हैं

एजेंट की बातों से न हों कनफ्यूज, लोन का इंश्योरेंस का कदम सही या गलत ऐसे समझें

सलाह
बिजनेस डेस्क

जब आप कोई लोन लेते हैं, तो बैंक या एजेंट अक्सर लोन इंश्योरेंस लेने की सलाह देते हैं, लेकिन क्या वाकई इसकी जरूरत होती है? हर स्थिति में नहीं। लोन इंश्योरेंस समझदारी का कदम तब है जब आपकी आय का मुख्य स्त्रोत आप खुद हैं या परिवार पर आपकी जिम्मेदारी है, लेकिन कई बार बैंक सिर्फ अपने कमीशन के लिए भी इसे बेचते हैं। इसलिए आप एजेंट की बातों के कनफ्यूज न हों और अपने लिए सही विकल्प चुनें। तभी आप लोन लेकर खुद को सुरक्षित कर सकते हैं, वरना कई यह आपके गले की फांस भी बन सकता है। अक्सर जब आप बैंक या एनबीएफसी से पर्सनल लोन, होम लोन या कार लोन लेने जाते हैं, तो एजेंट आपको एक और प्रोडक्ट बेचने की कोशिश करता है- लोन इंश्योरेंस वह कहता है कि अगर किसी वजह से आप लोन नहीं चुका पाए तो यह इंश्योरेंस आपकी ईएमआई भर देगा या आपके परिवार पर बोझ नहीं डालेगा। पहली नजर में यह बात सही लगती है, लेकिन असल में हर बार लोन इंश्योरेंस लेना फायदेमंद नहीं होता है। कई बार यह सिर्फ बैंक या एजेंट का कमिशन कमाने का तरीका होता है। इसलिए बिना समझे इंश्योरेंस खरीदना नुकसानदायक हो सकता है।

लोन इंश्योरेंस होता क्या है?

लोन इंश्योरेंस एक ऐसी पॉलिसी होती है जो यह सुनिश्चित करती है कि अगर किसी वजह से लोन लेने वाला व्यक्ति ईएमआई नहीं भर पाता, तो इंश्योरेंस कंपनी बाकी ईएमआई का भुगतान करेगी। इसका मकसद बैंक या लेंडर को डिफॉल्ट रिस्क से बचाना होता है, लेकिन ध्यान दीजिए कि यह सुरक्षा आपके परिवार के लिए नहीं, बल्कि बैंक के लिए होती है। यानी बैंक को तो उसका पैसा मिल जाता है, पर आपके परिवार को सीधा फायदा नहीं होता।

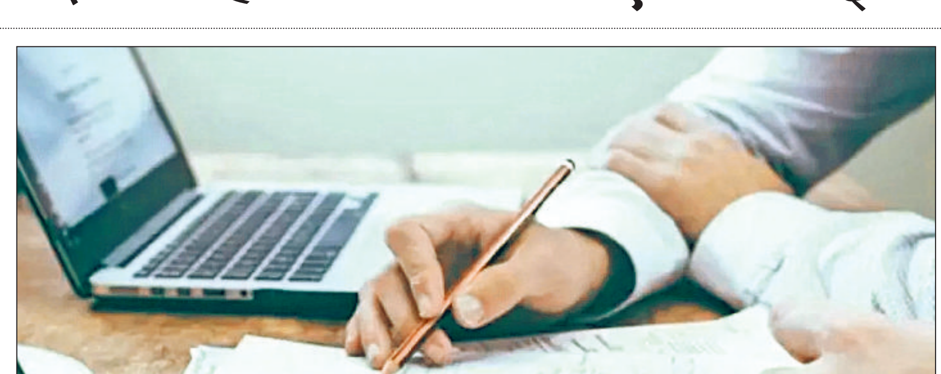

कब जरूरी है लोन इंश्योरेंस?

हर लोन के साथ इंश्योरेंस जरूरी नहीं, लेकिन कुछ परिस्थितियों में यह समझदारी भरा कदम हो सकता है।

1. **होम लोन या बड़ी रकम वाला लोन :** अगर आपने लंबी अवधि के लिए होम लोन या बिजनेस लोन लिया है, तो इंश्योरेंस आपको और परिवार को राहत दे सकता है।
2. **अगर आप सोल ब्रेडविनर हैं :** अगर परिवार में कमाने वाले आप ही हैं और किसी कारणवश आपकी मृत्यु हो जाए या नौकरी छूट जाए, तो यह पॉलिसी बाकी लोन चुका सकती है।
3. **अगर आपका प्रोफेशन रिस्की है :** जो लोग खतरनाक कामों में हैं या फिर मेडिकल इंडस्ट्री में हैं, तो उनके लिए यह इंश्योरेंस जरूरी है।

कब नहीं लेना चाहिए लोन इंश्योरेंस?

कई बार बैंक या एजेंट आपको डर दिखाकर यह पॉलिसी थमा देते हैं, लेकिन हर केस में इसकी जरूरत नहीं होती।

1. **अगर आपके पास लाइफ इंश्योरेंस पहले से है :** अगर आपके पास पर्याप्त टर्म इंश्योरेंस है, तो अलग से लोन इंश्योरेंस लेने की जरूरत नहीं है। आपका टर्म प्लान परिवार को पूरी सुरक्षा देता है।
2. **अगर लोन छोटी अवधि का है :** जैसे पर्सनल लोन 1-2 साल के लिए हो या कार लोन बहुत छोटी रकम का हो, तो उस पर इंश्योरेंस का प्रीमियम देना बेकार है।
3. **अगर ईएमआई आपकी इनकम का छोटा हिस्सा है :** जब ईएमआई आपकी इनकम का सिर्फ 10-15% हो, तो अतिरिक्त इंश्योरेंस का खर्च आपकी जेब पर बोझ बन सकता है।

एजेंट से कनफ्यूज ना हों

एजेंट या बैंक अधिकारी कई बार कहते हैं कि बिना इंश्योरेंस लोन अप्रूव नहीं होगा, लेकिन यह पूरी तरह गलत है। आरबीआई और इरडा दोनों ने साफ किया है कि लोन इंश्योरेंस कभी भी अनिवार्य नहीं होता। अक्सर ग्राहक कन्फ्यूज होकर पॉलिसी ले लेता है, जो बाद में बेकार साबित होती है।

कितना होता है लोन इंश्योरेंस का प्रीमियम?

अगर आप 10 लाख रुपये का लोन करीब 5 साल के लिए लेते हैं तो उस पर आपको 10-12 हजार रुपये का इंश्योरेंस प्रीमियम लग सकता है। यह प्रीमियम कम-ज्यादा हो सकता है और आप इस पर बारगेनिंग भी कर सकते हैं। यह प्रीमियम या तो आपसे एकमुश्त लिया जाता है या लोन राशि में जोड़ दिया जाता है। मतलब, कुछ मामलों में आप उसके ऊपर भी ब्याज चुकाते हैं।

क्या लोन इंश्योरेंस टैक्स बेनिफिट देता है?

कुछ लोन इंश्योरेंस प्रीमियम पर टैक्स बेनिफिट मिल सकता है, लेकिन यह इंश्योरेंस के प्रकार पर निर्भर करता है। अगर पॉलिसी लाइफ इंश्योरेंस कैटेगरी में आती है, तो सेक्शन 80सी के तहत छूट मिल सकती है, लेकिन अगर यह केवल क्रेडिट प्रोटेक्शन पॉलिसी है, तो टैक्स बेनिफिट नहीं मिलता।

सही निर्णय कैसे लें?

1. **तुलना करें :** विभिन्न इंश्योरेंस कंपनियों के प्रीमियम और कवरेज की तुलना करें।
2. **एजेंट की बातों पर आंख मूंदकर भरोसा न करें :** हर सलाह के पीछे कमीशन छिपा हो सकता है।
3. **अपनी जरूरत देखें :** अगर आपका लोन छोटा है या पहले से टर्म इंश्योरेंस है, तो अतिरिक्त इंश्योरेंस की जरूरत नहीं।
4. **पॉलिसी डॉक्युमेंट पढ़ें :** साइन करने से पहले उसके सभी दस्तावेजों को जरूर समझें। यानी किन परिस्थितियों में क्लेम नहीं मिलेगा।

लोन इंश्योरेंस एक अच्छा सेफ्टी नेट

लोन इंश्योरेंस एक अच्छा सेफ्टी नेट है, लेकिन हर किसी के लिए जरूरी नहीं। अगर आपके ऊपर बड़ा लोन है, परिवार आप पर निर्भर है या आपकी हेल्थ रिस्की है, तो इसे लेना समझदारी है, लेकिन अगर आपका लोन छोटा है, ईएमआई कंट्रोल में है और टर्म इंश्योरेंस पहले से है, तो एजेंट की बातों में आकर इंश्योरेंस लेने की जरूरत नहीं। हमेशा याद रखें कि लोन इंश्योरेंस बैंक के लिए सुरक्षा है, आपके लिए नहीं।

खबर संक्षेप

वंदे मातरम की वर्षगांठ पर समारोह आयोजित

महेंद्रगढ़। आरपीएस डिग्री कॉलेज में मानविकी विभाग की ओर से राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम की 150वीं वर्षगांठ का भावपूर्ण समारोह आयोजित किया गया। कॉलेज परिसर देशभक्ति के रंग में रंग गया। कार्यक्रम में निदेशक डॉ. महेश यादव, कुलसचिव डॉ. देवेंद्र यादव, अधिष्ठाता डॉ. हेमंत कुमार, डॉ. राजेश डागर, भूपेंद्र, डॉ. अशोक व डॉ. हिमांशु उपस्थित रहे। समारोह की शुरूआत सुबह 10 बजे कॉलेज के ऑडिटोरियम में हुई। इस आयोजन का उद्देश्य युवाओं को देश के गौरवशाली इतिहास और राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम के महत्व से अवगत कराना था।

विद्या भारती स्कूल में शिक्षक अभिभावक सम्मेलन

नारनौल। विद्या भारती पब्लिक स्कूल निजामपुर में शनिवार को अध्यापक-अभिभावक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्था के चेयरमैन एडवोकेट राजकुमार यादव, वाइस चेयरपर्सन डॉ. ऊषा यादव, प्रबंध निदेशक एडवोकेट पीयूष यादव, निदेशक डॉ. रविन्द्रा यादव, उप प्राचार्य सपना मल्होत्रा, किड्स ब्लॉक इंचार्ज विजय सोनी, कोर्डिनेटर धर्मवीर तथा भावेश गोयल सहित सभी अध्यापकगण उपस्थित थे।

सूरज स्कूल में हैप्पी क्लासरूम पर कार्यशाला

महेंद्रगढ़। सूरज स्कूल नारनौल में शिक्षकों के लिए हैप्पी क्लासरूम विषय पर ज्ञानवर्धक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में रिसोर्सपर्सन नीलू जावला व डॉ. तरंग गौड़ ने शिक्षकों को प्रभावी शिक्षण तकनीकों व कक्षा संचालन की आधुनिक विधियों की जानकारी दी। कार्यशाला का शुभारंभ प्रधानाचार्या ऋतु चहल की उपस्थिति में किया गया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि एक कुशल शिक्षक वही होता है, जो कक्षा को न अनुशासित रख सके, बल्कि बच्चों के मनोविज्ञान को समझते हुए।

आरपीएस कॉलेज शतरंज में दूसरे स्थान पर

महेंद्रगढ़। आरपीएस डिग्री कॉलेज बालाना की शतरंज टीम ने हाल ही में आयोजित इंटर कॉलेज शतरंज प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए द्वितीय स्थान हासिल किया है। यह प्रतिष्ठित प्रतियोगिता इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर रेवाड़ी की ओर से आयोजित की गई, जिसमें टीम खिलाड़ी हर्ष, अर्पित, नितिन, लक्की ने असाधारण रणनीतिक कौशल और मानसिक दृढ़ता का प्रदर्शन किया तथा फाइनल तक का सफर तय किया। इस शानदार उपलब्धि पर कॉलेज के चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव व सीईओ मनीष राव ने बधाई दी।

न्याय तक पहुंच राष्ट्रीय विधिक सेवा का उद्देश्य

महेंद्रगढ़। राष्ट्रीय विधिक सेवा दिवस 2025 की पूर्व संध्या के अवसर पर हारट्रोन स्किल सेंटर फॉर कंप्यूटर एजुकेशन एंड ट्रेनिंग सतनाली मोड़ महाराणा प्रताप चौक के सभागार में आयोजित विधिक सेवा जागरूकता कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अधिवक्ता रेखा यादव ने समाज के कमजोर वर्गों को न्याय की पहुंच सुनिश्चित करने के महत्वपूर्ण प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि न्याय सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध होना चाहिए और निःशुल्क कानूनी सेवाएं इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं।

ओलंपियाड में विद्यार्थियों ने दिमागी घोड़े दौड़ाए

महेंद्रगढ़। आरपीएस ग्रुप के पूरे देश में स्थित विद्यालयों में सातवें ऑल इंडिया आरपीएस ओलंपियाड के द्वितीय चरण की परीक्षा का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में देशभर के छात्रों ने अपनी सुविधा अनुसार परीक्षा केन्द्रों का चयन कर सुबह 11 से 12 बजे तक परीक्षा दी। परीक्षा के दौरान सुबह से दोपहर तक सतनाली रोड पर वाहनों की भारी भीड़ के चलते जाम की सी स्थिति बनी रही। आरपीएस ग्रुप की चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव, सीईओ इंजीनियर मनीष राव, डिप्टी सीईओ कुनाल राव व प्राचार्य डॉ. किशोर तिवारी ने उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

निर्माण पूरा होने के बाद लोगों को मिलेगी पानी गुणवत्ता की रिपोर्ट, 170 गांवों की आबादी को होगा फायदा

जल परीक्षण प्रयोगशाला का 65 प्रतिशत कार्य पूरा, अगले साल तक बनकर तैयार होने की उम्मीद

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

जनस्वास्थ्य विभाग के कार्यालय परिसर में निर्माणाधीन जल परीक्षण प्रयोगशाला पांच माह में तैयार हो जाएगी। प्रयोगशाला का 65 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है। सिर्फ 35 प्रतिशत कार्य बाकी है। प्रयोगशाला चालू होने से महेंद्रगढ़, सतनाली व कनीना के साथ 170 गांवों की आबादी को राहत मिलेगी। प्रयोगशाला बनने के बाद इन क्षेत्र के लोगों को पानी की जांच के लिए नारनौल नहीं जाना पड़ेगा। जल परीक्षण प्रयोगशाला पर विभाग की ओर से 65 लाख रुपये खर्च किए जा रहे हैं। मार्च 2026 तक प्रयोगशाला का कार्य पूरा होने की उम्मीद है।

महेंद्रगढ़। जनस्वास्थ्य विभाग कार्यालय निर्माणधीन प्रयोगशाला। *फोटो : हरिभूमि*

महेंद्रगढ़, सतनाली, कनीना में जल गुणवत्ता जांच के लिए कोई सरकारी लैब नहीं होने से यहां के लोगों को परेशानी हो रही थी। लोगों जल की गुणवत्ता की जांच के लिए नारनौल जाना पड़ता था। क्षेत्र में लैब की कमी काफी समय से खल रही थी। लैब की दूरी अधिक होने के कारण लोग जांच के लिए कतराते थे, साथ ही उन्हें किराया खर्च करना पड़ रहा था।

लोगों की मांग पर जनस्वास्थ्य विभाग ने गत वर्ष से ही शहर में लैब स्थापित कराने की प्रक्रिया शुरू की। योजना के अनुसार 65 लाख रुपये बजट पास होने पर विभाग की ओर से दिसंबर 2024 में टेंडर प्रक्रिया पूरी कर एजेंसी को कार्य आवंटित किया और मार्च 2025 में प्रक्रिया पर काम शुरू हो चुका है। लैब चालू होने के बाद क्षेत्र के लोगों को नारनौल की भागदौड़ से राहत मिलेगी और समय की भी बचत हो होगी। इसमें आम लोग अपने घर से पानी के सैंपल लाकर जांच करवा सकेंगे।

65 लाख रुपये बजट पास होने पर विभाग की ओर से दिसंबर 2024 में टेंडर प्रक्रिया पूरी कर एजेंसी को कार्य आवंटित किया और मार्च 2025 में प्रक्रिया पर काम शुरू हो चुका है।

लोगों को तुरंत मिलेगी पानी की गुणवत्ता की रिपोर्ट

शहर स्थित जनस्वास्थ्य विभाग के कार्यालय के परिसर के बनाई जा रही प्रयोगशाला में एक केमिस्ट कक्ष, एक रिकॉर्ड रूम व एक लेबोरेट्री कक्ष बनाया जाएगा। इसमें सभी आधुनिक सुविधाएं मौजूद रहेंगी तथा लोगों को तुरंत पानी गुणवत्ता की रिपोर्ट दी जाएगी। शहर की करीब 80 हजार आबादी व 170 गांवों के ग्रामीणों को नजदीक ही जल गुणवत्ता की जानकारी मिल जाएगी। इससे लोगों को यह फायदा मिलेगा की पानी की गुणवत्ता कैसी है।

अगले साथ कार्य पूरा कर लिया जाएगा कार्य

विभाग नागरिकों को राहत देने के लिए तत्पर है, अगले साल तक पानी की गुणवत्ता की जांच के लिए लैब तैयार कर क्षेत्र के लोगों को लैब की सौगात प्रदान कर दी जाएगी। अभी लैब का निर्माण कार्य जारी है, जिसे अगले साल मार्च तक पूरा कर लिया जाएगा।

– सुरेंद्र यादव, जेई, जनस्वास्थ्य विभाग महेंद्रगढ़।

रेवाड़ी रोड स्थित एक होटल में व्यापार मंडल की बैठक आयोजित

व्यापार मंडल का उद्देश्य व्यापारियों की एकजुटता व संगठन को सक्रिय करना

व्यापार मंडल से मेरा पुराना नाता रहा: पूर्व मंत्री एवं विधायक ओमप्रकाश

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

संगठन के विस्तार एवं मजबूती के उद्देश्य से शनिवार को रेवाड़ी रोड स्थित अपार होटल में व्यापार मंडल की बैठक आयोजित की गई, जिसमें जिला प्रधान वैद्य किशन वशिष्ठ की अध्यक्षता में शहर इकाई की घोषणा की गई। शहर इकाई को जैंबो कार्यकारिणी का आकार दिया गया है, जिसमें एक प्रधान के अलावा नौ उपप्रधान तथा अनेक पदाधिकारी नियुक्त किए गए हैं। इस बैठक में पूर्व मंत्री एवं विधायक ओमप्रकाश यादव बतौर मुख्यातिथि पहुंचे तथा व्यापारियों को संबोधित किया।

मीटिंग को संबोधित करते हुए जिला प्रधान वैद्य किशन वशिष्ठ ने कहा कि व्यापारियों की एकता ही संगठन की मजबूती का आधार है। उन्होंने कहा कि संगठन को विस्तार दिया जा रहा है तथा जिला कार्यकारिणी के गठन के बाद अब शहरी इकाई तैयार की जा रही हैं। नारनौल शहर की इकाई की कमान संजय गर्ग को शहरी प्रधान के रूप में सौंपी गई है तथा इनके साथ शहर के व्यापारियों को जोड़ा गया है। उन्होंने कहा कि व्यापार मंडल का उद्देश्य व्यापारियों की एकजुटता को बढ़ाना है और संगठन को सक्रिय बनाना है। उन्होंने कहा कि संगठन का उद्देश्य व्यापारी हित के काम करना है। चाहे व्यापारियों की सुरक्षा का मामला हो या कोई हानि होने पर आर्थिक सहायता का कदम हो।

नारनौल। व्यापारियों को संबोधित करते पूर्व मंत्री एवं विधायक ओमप्रकाश यादव। *फोटो : हरिभूमि*

व्यापार मंडल हर काम को बढ़–चढ़कर करेगा, जिसमें व्यापारियों की भलाई होती है। इसके लिए चाहे उन्हें कितना भी संघर्ष करना पड़े, अपने प्राणों तक की आहुति देनी पड़े, वह हमेशा आगे ही आगे खड़े तैयार मिलेंगे। इस मौके पर पहुंचे पूर्व मंत्री एवं विधायक ओमप्रकाश यादव ने कहा कि व्यापार मंडल से उनका पुराना नाता रहा है। बेशक से वे नौकरी में रहे, लेकिन व्यापारियों की मदद में हमेशा साथ दिया है।

उन्होंने कहा कि जब किसी गांववाले से शहरी व्यापारी का विवाद हो जाता है तो वे शहरी व्यापारी का साथ देते आए हैं। उन्होंने कहा कि वह व्यापारियों की मदद के दम पर ही पिछली तीन योजनाओं से नारनौल विधानसभा का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। इसमें व्यापारियों का बहुत बड़ा योगदान है। इस मौके पर कार्यकारिणी की घोषणा संगठन के वरिष्ठ जिला उपप्रधान सुरेंद्र चौधरी ने की तथा नए पदाधिकारियों को मंच से पटका एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। सबसे पहले जिला कार्यकारिणी में बतौर कानूनी सलाहकार सम्मिलित किए गए एडवोकेट राजकुमार यादव, जिला उपाध्यक्ष राकेश कुमार यादव एडवोकेट, रोहतास अग्रवाल तथा जिला महामंत्री राजेश चौधरी को सम्मानित किया गया।

यह रहे मौजूद

कार्यक्रम में संरक्षक लाला सत्यनारायण गुप्ता, संरक्षक धर्मचंद छाबड़ा, सरंक्षक सरदार बलदेव सिंह चहल, मार्केट कमेटी के पूर्व चेयरमैन जेपी सैनी, दीपक शांडिल्य एवं रेवाड़ी पेट्रोल पंप प्रधान सुंदर लाल यादव आदि समेत अनेक गणमान्य व्यापारी मौजूद थे।

शहर कार्यकारिणी घोषित

शहर कार्यकारिणी में संजय गर्ग को प्रधान, अजय गुपता, दीपक बंसल, गोपाल मित्तल, जयप्रकाश, कृष्ण कुमार यादव, जगदीश किंगर, महावरी जैन, विनोद सर्राफ, सुधीर यादव को शहरी उपप्रधान, प्रदीप संघी को कार्यकारिणी सदस्य, विनोद सोनी एवं पूर्णचंद सिंघल को शहरी महामंत्री, संजय मित्तल, ओमप्रकाश यादव एवं अनिल गोयल को शहरी महासचिव, अमित गर्ग, भारत जौहरी, देवेंद्र नूनीवाला एवं हरीराम सैनी को शहरी सहसचिव बनाया गया। इसी प्रकार मोनू, अतुत संघी, तरणजीत सिंह, संदीप जैन, संजय सिंघल, मनीष भारद्वाज, रोहतास सैनी, गर्वेश वर्मा, अनूप गोयल, देवेंद्र सैनी, केशव सोनी, हिमांशु सोनी, दीपक वर्मा व मोनू नरूला को कार्यकारिणी सदस्य के रूप में शामिल किया गया है।

किशन चंद सर्वसम्मति से बने नांगल चौधरी पैक्स के चेयरमैन

नारनौल। किशनचंद का स्वागत करते हुए। फोटो : हरिभूमि

- गांव पहुंचने पर हुआ भव्य स्वागत किया गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

क्षेत्र के गांव अमरपुरा निवासी और समाजसेवी किशन चंद शर्मा को सर्वसम्मति से नांगल चौधरी पैक्स समिति का चेयरमैन नियुक्त किया गया है। उनकी इस जीत से पूरे क्षेत्र में खुशी की लहर दौड़ गई। गांव लौटने पर ग्रामीणों ने फूल-मालाओं से उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया। बता दें कि किशन चंद बोहरा लंबे समय से सामाजिक कार्यों में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने गांव अमरपुरा की ग्राम पंचायत में लगातार दस वर्षों तक पंच के रूप में कार्य किया है। इस दौरान उन्होंने गांव में विकास और सामाजिक एकता के लिए कई महत्वपूर्ण पहल की। किशनचंद शर्मा बोहरा ने सदैव किसानों, मजदूरों और आम ग्रामीणों की समस्याओं को प्राथमिकता दी और उनके समाधान में अग्रणी भूमिका निभाई। नई जिम्मेदारी मिलने पर किशन चंद बोहरा ने कहा कि वे पैक्स समिति के माध्यम से किसानों की सेवा को अपना मुख्य लक्ष्य बनाएंगे। उन्होंने कहा हमारा उद्देश्य किसानों को हर संभव सहायता प्रदान करना है। किसी भी किसान को ऋण, खाद, बीज या कृषि संबंधी किसी भी आवश्यकता के लिए भटकना न पड़े, इसके लिए समिति पूरी तत्परता से कार्य करेगी। उन्होंने कहा कि नांगल चौधरी क्षेत्र के किसानों की किसी भी प्रकार की समस्या को समय रहते सुलझाने के लिए ठोस कदम उठाए जाएंगे। समिति किसानों को समय पर ऋण सुविधा, खाद, बीज और अन्य कृषि संसाधन उपलब्ध कराएगी ताकि वे बिना किसी परेशानी के अपनी फसल उगा सकें। ग्रामीणों ने किशन चंद बोहरा की जीत को समाज के लिए गौरव की बात बताया है। ग्रामीणों ने कहा कि उनके नेतृत्व में पैक्स समिति किसानों के हित में ठोस कार्य करेगी।

मौजूद रहे

इसके अलावा सर्वसम्मति से अजीत सिंह, कृष्णा देवी, माया देवी, राधेश्याम, धर्मबीर सिंह, कृष्ण नंबरदार, पृथ्वी सिंह को निदेशक, जगतसिंह को विकास अधिकारी को नियुक्त किया गया है। इस मौके पर पैक्स प्रबंधक अशोक कुमार, मनोज कुमार शर्मा, जयसिंह, नरेश, दयाराम व लक्ष्मीनारायण आदि मौजूद थे।

नारनौल। सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते माता मरियम स्कूल के विद्यार्थी।

माता मरियम जनसेवा विद्यालय का वार्षिकोत्सव

नारनौल। माता मरियम जनसेवा विद्यालय में वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन "ऋतुओं के रंग" थीम पर किया गया। कार्यक्रम में ऋतुओं की संगीतमय अनुभूतियों को छात्र-छात्राओं ने आकर्षक प्रस्तुतियों के माध्यम से जीवंत कर दिया। समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि आर्क बिशप अनिल जेटी कूट ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। विद्यालय की छात्राओं ने हरियाणवी लोक संस्कृति पर आधारित मनमोहक नृत्य प्रस्तुत कर दर्शकों का दिल जीत लिया। नर्सरी के नन्हे-मुन्नों ने भी जीवन के हर पल को उत्सव की तरह मनाने का संदेश देते हुए अपनी प्रस्तुतियों से सभी को भावविभोर कर दिया। हेडमिस्ट्रेस सिस्टर सविता ने विद्यालय की उपलब्धियों व नए बदलावों की जानकारी दी और आगंतुकों का स्वागत किया। विशेष अतिथि सहायक बिशप दिल्ली कैथलिक आर्कडायसिस दीपक वी. तावरो ने अपने प्रेरणादायक विचार साझा किए। चेयरमैन फादर विंसेंट डीसूजा, मैनेजर फादर रंजीत सोरेंग और प्राचार्य फादर जॉन एम. फर्नांडीस ने मुख्य अतिथि सहित सभी गणमान्य व्यक्तियों का शाल एवं स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मान किया। कार्यक्रम में कक्षानुसार छात्रों ने विभिन्न ऋतुओं पर आधारित प्रस्तुतियां दीं।

एक राष्ट्र, एक चुनाव एवं पंच परिवर्तन विषय पर संगोष्ठी आयोजित

- प्रदेश संगठन महामंत्री फणींद्रनाथ शर्मा का देशी अंदाज में स्वागत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ महेंद्रगढ़

सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ हरियाणा जाट पाली में एक राष्ट्र, एक चुनाव एवं पंच परिवर्तन विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के छात्र, शिक्षक तथा क्षेत्र के अनेक सामाजिक कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मुख्यातिथि व मुख्य वक्ता के रूप में भाजपा के प्रदेश संगठन महामंत्री फणींद्रनाथ शर्मा, भाजपा जिला अध्यक्ष डॉ. यतेंद्र राव व विवि कुलपति डॉ. टंकेश्वर कुमार रहे। फणींद्रनाथ शर्मा ने एक राष्ट्र, एक चुनाव विषय पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि बार-बार होने वाले चुनाव देश की विकास प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करते हैं। एकसाथ चुनाव कराने से न केवल संसाधनों की बचत होगी, बल्कि शासन व्यवस्था अधिक स्थिर और पारदर्शी बनेगी व वोट डालने वाले मतदाताओं की संख्या भी बढ़ेगी। विश्वविद्यालय कुलपति डॉ. टंकेश्वर कुमार ने कहा कि आज का युवा कल का भविष्य है। परिवर्तन की शुरुआत युवा से ही होती है।

महेंद्रगढ़। ट्रेक्टर चलाते प्रदेश संगठन महामंत्री फणींद्रनाथ शर्मा।

मौजूद रहे

इस अवसर पर को कोऑपरेटिव बैंक चेयरमैन राजेंद्र शर्मा, जिला भाजपा महिला मंत्री डॉ. अर्चना ठाकुर, प्रो वीसी आनंद शर्मा, प्रदेश पेनलिस्ट राकेश शर्मा, युवा मोर्चा प्रदेश टीम से सन्नी नारा, प्रसन्नता, नवीन शर्मा, सिकंदर, मंजीत यादव व शिक्षकगण, विद्यार्थी व सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

खबर संक्षेप

यदुवंशी कॉलेज के विद्यार्थियों ने जिला युवा उत्सव में परचम लहराया

नारनौल। यदुवंशी डिग्री कॉलेज के विद्यार्थियों ने सभागार भवन में आयोजित जिला युवा उत्सव 2025 में अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में जिले के विभिन्न विद्यालयों और महाविद्यालयों के युवा प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। यदुवंशी कॉलेज की छात्रा मानसी ने विज्ञान मॉडल में द्वितीय स्थान व पोस्टर मेंकिग में यदुवंशी कि टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। प्राचार्य बजरंग लाल ने कहा कि युवावस्था जीवन का स्वर्णिम काल है, जिसमें सही दिशा और सकारात्मक सोच के साथ किया गया।

एसडी स्कूल के विद्यार्थी निकले दो दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण पर

कनीना। एसडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ककराला ने अपने शैक्षिक कैलेंडर अनुसार विद्यार्थियों को दो दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण के लिए रवाना किया। इस दल में नौवीं से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थी शामिल हैं। जो गुलाबी नगरी जयपुर पंहुचेगें। विद्यार्थी वहां पर आमेर फोर्ट सहित आधुनिक व पुरातन संस्कृति से रूबरू होंगे। जयपुर में आमेर का किला, जयगढ का किला, जल महल, जंतर-मंतर, राजमंदिर सिनेमा हाल, सीटी पैलेस, हवा महल, बिड़ला तारामंडल, बिड़ला मंदिर, एल्बर्ट हॉल सहित अन्य दर्शनीय स्थलों का भ्रमण करेगें।

सांसद खेल महोत्सव में इंडस वैली स्कूल वॉलीबाल में रही प्रथम

महेंद्रगढ़। आदर्श ग्राम दौंगड़ा अहीर में दिवस पर सासंद खेल प्रतियोगिता का आयोजन सांसद चौधरी धर्मबीर सिंह के दिशानिर्देशानुसार जिला प्रशासन की तरफ से दौंगड़ा अहीर खेल स्टेडियम में किया गया। इस अवसर पर वॉलीबॉल, कब्ड्डी, कुश्ती, रेस, लॉन्ग जम्प, हाई जम्प, रस्सा कस्सी आदि खेलों का आयोजन किया गया। इंडस वैली पब्लिक स्कूल दौंगड़ा अहीर टीम ए ने वॉलीबॉल में प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर डैरोली अहीर व तृतीय स्थान पर इंडस वैली पब्लिक स्कूल दौंगड़ा अहीर की टीम बी रही।

12 नवंबर को पीर बाबा की कव्वाली, हिंदू-मुस्लिम एकता का देंगे संदेश

किन्नर समाज 11 नवंबर को करेगा माता जागरण

कोलकत्ता के भजन गायक संजय मित्तल भजनों के माध्यम से माता का गुणगान करेंगे

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नारनौल

मंगलमुखी किन्नर समाज की ओर से हिंदू–मुस्लिम एकता का प्रतीक दो दिवसीय माता का जागरण व पीर बाबा की कव्वाली का आयोजन 11 व 12 नवंबर को मोहल्ला कोलियान में किया जाएगा। इन दोनों कार्यक्रमों में जाने–माने भजन गायक व कव्वाल आएंगे। इसकी तैयारियों के लिए किन्नर समाज लोगों से भी संपर्क कर रहा है। यह जानकारी देते हुए समाज के प्रधान विनोद सैनी ने बताया कि मंगलमुखी किन्नर समाज हर वर्ष यह कार्यक्रम आयोजित कराता है। इसके पीछे का मुख्य कारण सबकी मंगलकामना करना तथा समाज में भाईचारा कायम रखना है। उन्होंने बताया कि पूरे समाज की मंगलकामना के लिए 11 नवंबर रात को मां भवानी का जागरण होगा। इस जागरण में मुख्य रूप से कोलकत्ता के विश्वविख्यात भजन गायक संजय मित्तल अपने भजनों के माध्यम से माता की महिमा का गुणगान करेंगे। वहीं उनके साथ उज्जैन से आरती सिंह राजपूत, देहरादून से सन्नी साईं, पटियाला से टोनी राजन व अमित माही भी आएंगे। कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर समाज के लोगों से संपर्क किया जा रहा है।

12 को होंगी कव्वाली

इसी प्रकार दूसरे दिन 12 नवंबर को सुबह 11 बजे से पीर बाबा की कव्वाली का आयोजन किया जाएगा, जिसमें फैजान अजमेरी, जयपुर से इदरिश कादरी, मुंबई से नरसीमा प्रवीण व इंद्री से जुनैद-जुवेद वारसी आएंगे। उन्होंने बताया कि इसी दिन सुबह से भंडारे का भी आयोजन किया जाएगा। इस मौके पर किन्नर समाज की गुरु मां महक भी मौजूद रही।

खबर संक्षेप

मोबाइल चुराने का आरोपी काबू, फोन बरामद

भिवानी। डिटेक्टिव स्टाफ लोहारू ने गांव नवा राजगढ़ के लिए ऑटो किराए पर लेकर ऑटो चालक का मोबाइल चोरी करने के मामले में आरोपी को गिरफ्तार किया है। दिनेश निवासी अंबेडकर कॉलोनी भिवानी ने थाना जुईकलां पुलिस को शिकायत दर्ज करवाई थी, जिसमें शिकायतकर्ता ने पुलिस को बतलाया कि गत 26 जुलाई को अपने आटो के साथ वैश्य कॉलेज के पास खड़ा था, जो सुबह तीन बजे दो लड़के आए, जिन्होंने आटो गांव नवा राजगढ़ तक किराए पर ले जाने के लिए बात की और गांव में पहुंचने पर आरोपियों ने ऑटो के पैसे नहीं दिए, वहीं ऑटो में रखा मोबाइल चुरा लिया। पुलिस ने थाना जुईकलां में दर्ज किया था।

दुकान में घुसकर मोबाइल चुराने का आरोपित काबू

भिवानी। डिटेक्टिव स्टाफ लोहारू की टीम ने दुकान में घुसकर मोबाइल चोरी के मामले में आरोपी को गिरफ्तार किया है। नईम निवासी उप्र ने थाना जुईकलां पुलिस को बताया कि लोहारू रोड पर उन्होंने दुकान करी हुई है, जो चार अगस्त की रात को उनकी दुकान में उनका भांजा सोया हुआ था, जो चोर दुकान के अंदर घुसकर दुकान में रखा मोबाइल को चोरी करके ले गया था। मुख्य सिपाही दीपक कुमार ने दुकान में घुसकर फोन चोरी करने के मामले में आरोपी को चारा मंडी भिवानी से गिरफ्तार किया है। पहचान धीरज पुत्र रामप्रसाद निवासी गुलवारा मधुबन जिला ईस्ट चंपारण बिहार के रूप में हुई है।

पुलिस ने फरार उद्घोषित आरोपित पकड़ा

भिवानी। थाना सिविल लाइन पुलिस की महिला उपनिरीक्षक बसंती ने 138 एनआई एक्ट के तहत फरार चल रहे उदघोषित आरोपी को भिवानी से गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान अनिल कुमार पुत्र लोकराम निवासी फरटिया केहर लोहारू के रूप में हुई है। आरोपी को अभियोग संख्या 9 दिनांक गत आठ जनवरी धारा 209 भारतीय न्याय संहिता के तहत थाना सिविल लाईन भिवानी में दर्ज अभियोग में गिरफ्तार किया है। आरोपी को न्यायालय ने आरोपी को जिला कारागार भेजने के आदेश दिए हैं।

बाइक चुराने के दो आरोपित गिरफ्तार

भिवानी। थाना सिविल लाइन पुलिस ने बाइक चोरी करने के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। जितेंद्र निवासी चरखी दादरी ने थाना सिविल लाइन पुलिस को शिकायत दर्ज करवाई थी, जिसमें शिकायतकर्ता ने पुलिस को बतलाया कि 30 अगस्त को दवा इंडिया मेडिकल स्टोर पर दवाई लेने के लिए आया था, जहां से चोर मेडिकल स्टोर के सामने से मोटरसाइकिल को चोरी करके ले गए थे।

शीघ्र रोड नहीं बनाया तो विधायक का होगा बहिष्कार: ग्रामीण

विधायक और जिला प्रशासन के खिलाफ ग्रामीणों का रोष-प्रदर्शन

10 वर्षो से बामला में फिरनी मार्ग धसां होने से ग्रामीण परेशान

भिवानी। बामला की फिरनी मार्ग धंसा व जमा गंदे पानी को लेकर विरोध जताते ग्रामीण।

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

गांव बामला में पिछले 10 वर्षो से सांगा की तरफ एक किलोमीटर फिरनी पर रोड धसां हुआ हैं, जिसकारण रोड पर गंदा पानी जमा हैं, जहां से ग्रामीणों को आवागमन करने में भारी परेशानी का सामना करना पड़ता हैं, जिससे आक्रोशित ग्रामीणों ने जनसंघर्ष समिति के नेतृत्व में जिला प्रशासन व विधायक के खिलाफ प्रदर्शन किया तथा विधायक को अल्टीमेटम दिया कि जल्द से जल्द रोड व नाले की मरम्मत नहीं करवाई तो विधायक को गांव में नहीं घुसने दिया जाएगा। प्रदर्शन में शामिल जिला पार्षद रूपेंद्र ग्रेवाल व जनसंघर्ष समिति के संयोजक कामरेड ओमप्रकाश ने बताया कि विधानसभा चुनाव से पहले विधायक घनश्याम सर्राफ ने गांव में वादा किया था कि चुनाव के बाद तीन महीने के अंदर रोड ऊंचा उठाकर नाला बनाकर कीचड़ खत्म कर दिया जाएगा, लेकिन 15 लाख का बजट मंजूर होने के बाद भी एक साल बीत चुका, समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई हैं।

यह रहे मौजूद

इस अवसर पर रामकिशन मान, कर्मबीर, हवा सिंह, मांगेराम, रमेश, धर्मपाल, रणबीर, रामफल थानेदार, बिजेन्द्र, विजय, रघबीर, राजेन्द्र, धर्मपाल, जिले सिंह, बलजीत, कालूराम, धर्मबीर, गूंगा पहलवान, राजल पंडित, पाला पंडित, महेन्द्र पंडित, रमेश, जिले धानक, सुरेश, धर्मपाल धानक व मोनू आदि मौजूद रहे।

कीचड़ से गांव वाले तंग हो रहे

ग्रामीणों ने बताया कि विधायक सर्राफ को उनका वायदा कई बार याद दिलाने के बाद भी वे इस ओर कोई ध्यान नहीं दे रहे। इस कीचड़ से गांव वाले तंग हो चुके हैं तथा सात-आठ गांव के लोग यहां से गुजरते हुए बामलावासियों को कोसते रहते है। ग्रामीण ने प्रदर्शन करते हुए बताया कि उनके सब्र का बांध टूट गया है और वे पिछले 10 वर्षों से तंग आए हुए है। वे विधायक से रोजगार व खेती की समस्याओं के समाधान की मांग नहीं कर रहे है, लेकिन उनकी मांग को भी वे अनसुना कर रहे है, जिसके चलते ग्रामीणों में भारी रोष है। ग्रामीणों ने चेतावनी दी कि एक दिन इकट्ठा होकर वे विधायक के कैंप आफिस पर भारी प्रदर्शन करेंगे।

रेल अंडरपास महापंचायत ने जीतूवाला ओवरब्रिज निर्माण को लेकर किया प्रदर्शन

■ पीडब्लूडी विभाग से ओवरब्रिज का उद्घाटन शीघ्र करने की मांग की

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

भिवानी। जीतूवाला ओवरब्रिज निर्माण को लेकर नारेबाजी करते रेल अंडरपास महापंचायत के सदस्य। फोटो: हरिभूमि

रेल अंडरपास महापंचायत ने प्रधान एवं पार्षद शिवकुमार गोठवाल की अगुवाई में शनिवार को जीतूवाला ओवरब्रिज श्याम बाग के सामने रोष प्रदर्शन किया और पीडब्लूडी विभाग से ओवरब्रिज का उद्घाटन शीघ्र करने की मांग की। उन्होंने बताया कि पुल पर तुरंत प्रभाव से लाइटें लगाई जाए, सर्विस रोड बनवाया जाए, जीतूवाला छोर पर सीवरेज लाइन का पानी गलियों में भरा हुआ है, उसे तुरंत दुरूस्त करवाया जाए सहित अनेक मांगे प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि जल्द से जल्द मांगों को पूरा नहीं किया तो वे आंदोलन करने पर मजबूर होंगे। महासचिव सुखबीर सिंह चौहान ने कहा कि पुल के साथ सर्विस रोड निर्माण न होने से आसपास के निवासियों का आना-जाना बंद हो गया है। सरकार को जल्द से जल्द सर्विस रोड बनवाना चाहिए। इसके बाद निर्माणाधीन दिनोद रोड का निरीक्षण कर सभी सदस्यों ने खुशी जताई और नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह का आभार जताया। वहीं महापंचायत ने दिनोद रोड के निर्माण कार्य का निरीक्षण किया। इस दौरान रामशरण ठेकेदार ने बताया कि दिनोद रोड को बहुत ही अच्छे तरीके से बनाया जा रहा है तथा अच्छे तरीके से माल की गुणवत्ता को देखा जा रहा है। महापंचायत ने कहा कि रोड को जल्द से जल्द पूरा किया जाए, ताकि लोगों का आवागमन जल्द हो सके। प्रदर्शन में शिवकुमार गोठवाल, कुलदीप सिंह तंवर, मनीष बंसल, रामशरण ठेकेदार, रामसिंह वैद्य, रोहतास वर्मा, हनुमान, जयबीर, चांडा राजपूत, राजेश दुकानदार, सुनील तंवर,सुरेंद्र सिंह राजपूत, सतपाल चौकीदार, शमशेर सिंह व हंसराज प्रजापति आदि मौजूद रहे।

भिवानी। शिक्षकों के साथ विजेता विद्यार्थी। फोटो: हरिभूमि

हिंदी भाषण प्रतियोगिता में 11वीं कक्षा की झलक प्रथम

भिवानी। टीआईटी स्कूल में हिंदी भाषण प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया, जिसने विद्यार्थियों में साहित्य व भाषा के प्रति उत्साह की एक नई लहर पैदा कर दी। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को सार्वजनिक मंच पर अपने विचार व्यक्त करने और हिंदी भाषा के महत्व को स्थापित करने के लिए मंच प्रदान करना था। प्रतियोगिता के लिए लगभग 10 सामयिक और प्रेरणादायक विषय निर्धारित किए गए थे। विद्यालय की कक्षा 9 से 12 तक की विभिन्न कक्षाओं से कुल 25 छात्र-छात्राओं ने प्रतियोगिता में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और अपने विचारों को प्रवाहपूर्ण और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया।

भिवानी। नशे से दूर रहने की शपथ लेते शिक्षक व विद्यार्थी। फोटो: हरिभूमि

नशे की लत से परिवार एवं समाज दोनों असुरक्षित: प्राचार्य

भिवानी। महाराजा नीमपाल सिंह राजकीय महाविद्यालय में नशीले पदार्थो के दुष्प्रभाव पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय के एंटी नारकोटिक्स सैल इंचार्ज डॉ. देवेंद्र दलाल के निर्देश में हुआ। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को नशे से होने वाले नुकसान के बारे में अवगत करवाया। पर प्राचार्य जगबीर सिंह श्योराण ने मादक द्रव्यों के दुरूपयोग के परिणामों, नशीले पदार्थो के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पर प्रकाश डाला। उपप्राचार्य डॉ. जगवीर मान ने मादक द्रव्यों के उपयोग से जुड़ी आम गलत फहमियों को दूर करने के लिए ये सुझाव दिया कि कैसे विद्यार्थी अपने साथियों के दबाव से बच सकते है।

भिवानी। रक्तदाताओं को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित करते रक्तवीर राजेश डूडेजा।

गुरु तेग बहादुर के शहीदी दिवस पर 51 ने किया रक्तदान

भिवानी। गुरु तेग बहादुर के 350वें शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में शनिवार को सहारा चेरिटेबल ट्रस्ट ने एम्स बाढ़सा के सौजन्य से मिनी बाईपास रोड स्थित निजी रेस्तरां में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। शिविर की देखरेख शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा ने की, जिसमें कुल 51 रक्तदाताओं ने रक्तदान कर मानवता की सेवा में अपना योगदान दिया। ट्रस्ट के अध्यक्ष जगदीश मिताथल ने कहा कि गुरु तेग बहादुर का बलिदान शांति और मानवता का प्रतीक है। शकतवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा ने कहा कि रक्तदान शिविर आयोजन नहीं, बल्कि मानवसेवा का महायज्ञ है।

विधायक वाल्मीकि ने सुनीं जनसमस्याएं

बवानीखेड़ा विश्रामगृह में जन संवाद कार्यक्रम में समस्याएं सुनते विधायक कपूर वाल्मीकि।

बवानीखेड़ा। विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि ने शनिवार रेस्ट हाउस में हल्के के विभिन्न गांवों से आए सैंकड़ों नागरिकों से मुलाकात की। उन्होंने लोगों से बातचीत कर उनका हाल-चाल जाना और जनसमस्याओं एवं सुझावों को ध्यानपूर्वक सुना। विधायक ने कहा कि जनता की हर समस्या उनकी प्राथमिकता में है। उन्होंने मौके पर संबंधित विभागीय अधिकारियों से बात कर कई मुद्दों का तत्काल समाधान करवाया, ताकि लोगों को राहत मिले और कार्यों में पारदर्शिता बनी रहे। रेस्ट हाउस में आयोजित मुलाकात में नागरिकों ने क्षेत्र की सड़कों, बिजली, पानी और सामाजिक योजनाओं से जुड़ी समस्याएं रखीं। विधायक ने भरोसा दिलाया कि किसी भी नागरिक को समस्या के समाधान के लिए दफ्तरों के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे, प्रशासनिक स्तर पर तुरंत कार्रवाई होगी।

सांगवान खाप ने सलाहकार समिति का किया गठन

■ राजसिंह सांगवान बिरहीकलां समिति के मुख्य सलाहकार नियुक्त

हरिभूमि न्यूज ⏭ चरखी दादरी

सांगवान खाप ने अपने सामाजिक और कल्याणकारी कार्यों को नई दिशा देने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए दादा सांगू धाम खेड़ी बूरा के लिए मुख्य सलाहकार समिति का गठन किया है। यह समिति धाम परिसर में निर्माणाधीन भवन के कार्यों को मार्गदर्शन देगी और खाप के सामाजिक आयोजनों को सफल बनाने में सहयोग करेगी। सांगवान खाप के प्रधान सोमवीर सांगवान की अध्यक्षता में समिति का गठन किया। खाप के वरिष्ठ और अनुभवी सदस्य राजसिंह सांगवान बिरहीकलां को समिति का मुख्य सलाहकार नियुक्त किया है। इनके अलावा संदीप सरपंच, कैप्टन जयपाल, लीलू फौजी, एडवोकेट नवीन, विरेंद्र पप्पू, नरेश फौजी, सत्ते मैंबर, रणधीर घिकाड़ा, अधिवक्ता सुरेंद्र मैहड़ा, नीरज सांगवान कालुवाला, अनिल सांगवान कालुवाला, रण सिंह अटेला, धनपाल अटेला, पूर्व सरपंच राजेश झोझू, संजय बादल, बिल्लू पूर्व सरपंच झोझूखुर्द, प्रवीण असावरी, राजवीर पूर्व सरपंच चनानी, मुरी पहलवान आदमपुर, चरखी से भूपेंद्र सिंह सरपंच, प्रेम सुख पहलवान, प्रधान ईश्वर शर्मा, बिरही कला से फकीरचंद व विजेंद्र नीनी, खेड़ीबत्तर से विजय ठेकेदार व अनुप सिंह, मानकावास से कृष्ण व लालसिंह, बलजीत ठेकेदार बिरही खुर्द, मनफूल पांडवान, पूर्व सरपंच लवली, विक्रम पैंतावास कलां, सोनू पैंतावास कलां, राजकुमार फतेहगढ़, सोनू फतेहगढ़, अजीत सांगवान, ईश्वर कमांडर, धर्मबीर मानकावास, राजवीर पंच छपार, धर्मेंद्र छपार, धर्मवीर शर्मा, मुंशीराम जांगड़ा डूडीवाला, प्रीतम चेयमरैन बलाली, आनंद राशीवास, कृष्ण मास्टर सारंगपुर, सोनू साहवास जिला पार्षद, विजय ठेकेदार तिवाला को सदस्य नियुक्त किया।

भिवानी। कस्बे के राजकीय महिला कालेज में सफाई अभियान चलातीं छात्राएं।

स्वयंसेविकाओं ने चलाया सफाई अभियान

बाढ़ड़ा। कस्बे के राजकीय महिला महाविद्यालय की एनएसएस युनिट वन तथा द्वितीय द्वारा एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया। महाविद्यालय प्राचार्य डा. अनिल कुमार की अध्यक्षता व एनएसएस प्रभारी प्रोफेसर मीना व डॉ. मुकेश कुमार के मार्गदर्शन में शिविर का शुभारंभ स्वयंसेविकाओं द्वारा एनएसएस तालियों तथा एनएसएस लक्ष्य गीत गाकर किया। शिविर का मुख्य उद्देश्य पराली न जलाने से लेकर पर्यावरण की रक्षा करना और फसल अवशेष के वैज्ञानिक प्रबंधन को अपनाना रहा। शिविर के दौरान फसल अवशेष प्रबंधन विषय पर श्लोगन लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया।

वैश्य महाविद्यालय के कैडेट्स ने लहराया परचम

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

हरियाणा एनसीसी बटालियन द्वारा बीआरसीएम कॉलेज बहल में आयोजित वार्षिक प्रशिक्षण शिविर में वैश्य महाविद्यालय की एनसीसी इकाई के कैडेट्स ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, जिनका कॉलेज पहुंचने पर प्राचार्य डॉ. संजय गोयल ने सम्मान किया। डॉ. गोयल ने महाविद्यालय की एनसीसी इकाई के अधिकारियों कैप्टन डॉ. अनिल तंवर, डॉ. मनीष कुमार व लेफ्टिनेंट डॉ. रीना को बधाई दी और कहा कि उनके नेतृत्व में कैडेट्स राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहे हैं। बीआरसीएम कॉलेज बहल में दस दिवसीय वार्षिक प्रशिक्षण शिविर में वैश्य महाविद्यालय के 28 कैडेट्स ने अनेक गतिविधियों मे भाग लेते हुए रतिभा का लोहा मनवाया। उन्होंने बताया कि शिविर में बेस्ट ऑफ कमांड का अवॉर्ड अंडर ऑफिसर दीपेंद्र ने प्राप्त किया।

भिवानी। प्राचार्य डॉ. संजय गोयल व एनसीसी अधिकारी कैप्टन डॉ. अनिल तंवर के साथ कैडेट्स। फोटो: हरिभूमि

सार्जेंट बोस्को प्रथम

इसी प्रकार सोलो डांस प्रतियोगिता में सार्जेंट बोस्को ने प्रथम स्थान, टैग ऑफ वॉर रस्सा कस्सी प्रतियोगिता में अंडर ऑफिसर दीपेंद्र, कैडेट अंकुर,सन्नी, मनीष व परमजीत ने प्रथम, वॉलीबॉल में कैडेट दीपक व नमन ने प्रथम, स्लोगन लेखन में कैडेट दिक्षित ने प्रथम, ग्रुप डिस्किशन प्रतियोगिता में कैडेट्स नमन दयाल ने प्रथम एवं सार्जेंट बोस्को ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। महिला वर्ग की प्रतियोगिता में टैग ऑफ वॉर रस्सा कस्सी में कैडेट मोनिका प्रथम एवं वॉलीबॉल में कैडेट काफी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कैप्टन डॉ. अनिल तंवर ने बताया कि 11 हरियाणा एनसीसी बटालियन द्वारा लेफ्टिनेंट कर्नल थामस कुट्टी के नेतृत्व में बीआरसीएम कॉलेज बहल में वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया।

खुला दरबार में विधायक ने सुनीं जनसमस्याएं

चरखी दादरी। विधायक सुनील सांगवान ने रविवार को अपने कैंप कार्यालय में खुला दरबार लगाते हुए लोगों की समस्याएं सुनीं और उनका मौके पर ही निपटारा करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। इस दौरान उन्होंने बिजली, पानी, सीवर सहित अनेक समस्याओं का जल्द पूरा करवाने का आश्वासन दिया। विधायक सुनील सांगवान ने कहा कि दादरी हलके के विकास के लिए आज हर क्षेत्र में करोड़ों रुपयों की विकास योजनाएं चल रही हैं। अब तक प्रदेश की नायब सरकार द्वारा करीब छह हजार करोड़ रुपये की परियोजनाएं स्वीकृत की हैं जिन पर कार्य चल रहा है। विधायक ने कहा कि भाजपा निगरानी समिति और प्रमुख ग्रामीण मिलजुल कर विकास योजनाओं के क्रियान्वयन पर पैनी नजर रखें, ताकि पारदर्शिता व भ्रष्टाचारमुक्त सोच को बढ़ावा मिले।

स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का वास होता: गोयल

भिवानी। शनिवार को लिटिल हार्टस ग्रुप ऑफ स्कूलस एवं एमके हॉस्पिटल के संयुक्त तत्वावधान में लिटिल हार्टस पब्लिक स्कूल में स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया, जिसका शुभारंभ विद्यालय के चेयरमैन त्रिलोकचन्द गोयल किया। शिविर का आयोजन ग्रुप के महासचिव डॉ. संजय गोयल, एमडी डॉ पवन गोयल व भावना गोयल एवं एमके हॉस्पिटल की निदेशक चांदनी कंचवा के नेतृत्व एवं प्राचार्य दीपक जोशी की देखरेख में लगाया। शिविर में 300 लोगों ने रजिस्ट्रेशन करवाकर जांच करवाई। स्वास्थ्य जांच शिविर में लगभग 300 लोगों ने रजिस्ट्रेशन करवाकर अपनी जांच करवाई।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8814999151, 9253681005, 8295157800

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।

तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश

आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10×8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज़ पर मान्य। अन्य किसी साईज़ के लिए कार्ड रेट लागू।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

खुशी की लहर सर्वसमाज के पैनल ने निर्विरोध जीत हासिल कर ली

कॉलेज को शिक्षा, खेल व सामाजिक सरोकार क्षेत्र में नई ऊंचाइयों पर ले जाना उद्देश्य: डॉ. पिंकी

वैश्य महाविद्यालय पूर्व छात्र संघ चुनाव के प्रधान बने डॉक्टर अनिल पिंकी

हरिभूमि न्यूज ⏭ भिवानी

वैश्य महाविद्यालय के बहुप्रतीक्षित पूर्व छात्र संघ के चुनाव जो 23 नवंबर को होने निश्चित थे, जिसमें सर्वसमाज के पैनल ने निर्विरोध जीत हासिल कर ली है।

पैनल ने नामांकन दाखिल करने के बाद किसी अन्य उम्मीदवार ने नामांकन नहीं भरा, जिसके परिणामस्वरूप पूरी कार्यकारिणी का निर्विरोध निर्वाचन सुनिश्चित हो गया। यह जीत महाविद्यालय के इतिहास में महत्वपूर्ण अध्याय जोड़ती है, जो सर्वसमाज की एकता और भरोसे को दर्शाती है। इस निर्विरोध चुनाव में प्रधान डॉ. अनिल तंवर पिंकी, महासचिव मुकेश बंसल, उपप्रधान डॉ. विष्णुकांत शर्मा, कोषाध्यक्ष बलवान सिंह (पूर्व प्रधान) बने।

भिवानी। पूर्व छात्र संघ चुनाव के नवनियुक्त पदाधिकारियों का स्वागत करते सदस्य।

पिलानिया ने नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को बधाई दी

वहीं कार्यकारिणी सदस्यों में पंकज कसेरा, पीयूष अग्रवाल, ललित मित्तल, ललित अग्रवाल, नरेंद्र शर्मा, सुनील सीआर यादव, सुरेंद्र ग्रोवर रहे। इस मौके पर नवनियुक्त प्रधान डॉ. अनिल तंवर पिंकी ने निर्विरोध जीत पर खुशी व्यक्त करते हुए इसे विद्यार्थियों के विश्वास की जीत बताया। उन्होंने कहा कि वे अधिवक्ता सत्यजीत पिलानिया, कमल सिंह प्रधान, सुरेंद्र टीटू और पूरी टीम का हृदय से धन्यवाद करते है। अधिवक्ता पिलानिया ने नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को बधाई दी। इस अवसर पर नवनिर्वाचित कार्यकारिणी ने सत्यजीत पिलानिया, कमल सिंह प्रधान, सुरेंद्र टीटू, हरिस्वरूप, अमित गोयल, संजय कसेरा, दानसिंह, नीटू लाखोटीया आदि का विशेष धन्यवाद किया। इस ऐतिहासिक पल के साक्षी बनने के लिए प्रोफेसर प्रोमिला दहिया सुहाग, गोवर्धन आचार्य, सुमित जांगड़ा एडवोकेट, हरेंद्र एडवोकेट, लाखन सिंह, आनंद गर्ग, डॉ. हरिकेश पंघाल, विकास नहाड़िया, नीटू लाखोटिया, प्रवीण शर्मा, रितेश गोयल, अभिषेक कौशिक, पवन गर्ग, मनोज कुमार शर्मा, डॉ. सतबीर सिंह आदि उपस्थित रहे।

सड़क दुर्घटना में पूर्व चेयरमैन के भाई की मौत

बाढ़ड़ा। कस्बे में बीते दिवस सुबह सड़क दुर्घटना में घायल हुए आनंद कुमार की पीजीआई अस्पताल रोहतक में मौत हो गई। वह पूर्व चेयरमैन भल्लेराम विकास बाढड़ा के बड़े भाई थे और आज गांव के रामबाग में अंतिम संस्कार किया। पंचायत समिति के पूर्व चेयरमैन विकास भल्लेराम के बड़े भाई आनंद कुमार शुक्रवार को ढिगावा मंडी रोड़ पर वाहन की चपेट में आकर गंभीर रुप से घायल हो गए। परिजन उनको पहले सीएचसी गोपी व फिर पीजीआई रोहतक ले गए जहां उन्होंने दम तोड़ दिया। वह अपने पीछे एक पुत्र व एक पुत्री छोड़ गए हैं। अंतिम संस्कार में कांग्रेसी नेता जगतसिंह बाढड़ा, कर्मबीर नांधा, सरपंच राजेश श्योराण, पूर्व सरपंच बिजेन्द्र ढिल्लू, व्यापार मंडल अध्यक्ष सुदंरपाल, पूर्व अध्यक्ष संदीप सिंटी बाढड़ा, हवासिंह, मास्टर बजरंग सिंटी, जगबीर शर्मा, मंजीत पहलवाल व नरेश कादयान आदि ने शोक जताया।

विशेष: बाल दिवस 14 नवंबर

हम सब जानते हैं कि देश-समाज का भविष्य हमारे नौनिहालों के हाथों में है। इसलिए उनके लालन-पालन से लेकर उनके समग्र विकास पर बहुत ध्यान देने की जरूरत होती है। नए दौर में बच्चों के सामने कैसी चुनौतियां हैं, उन्हें किन स्तरों पर संघर्ष करना पड़ रहा है, इसे हमें समझना होगा। तभी उनका बचपन सुरक्षित होगा और उनके साथ देश-समाज का भविष्य भी बेहतर बन सकेगा।

हमारी सजगता से बच्चों को मिलेगा सुरक्षित बचपन-बेहतर भविष्य

कवर स्टोरी
लोकमित्र गौतम

हर साल 14 नवंबर को पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिवस पर भारत में बाल दिवस मनाया जाता है, जिसका पारंपरिक अर्थ रहा है- बच्चों की मासूमियत और जिज्ञासा को सहेजना। लेकिन यह कहना गलत नहीं होगा कि जब से बाल दिवस शुरू हुआ था, तब से अब तक इसके भावनात्मक अर्थ पूरी तरह से बदल चुके हैं। कभी यह बच्चों को टॉफी देने, उनसे कार्यक्रम करवाने और स्टेज से उन्हें अच्छी-अच्छी बातें सुनाने का दिन हुआ करता था। लेकिन 21वीं सदी के इस 25वें साल में बाल दिवस का मतलब हर बच्चे को डिजिटल, मानसिक और पर्यावरणीय रूप से सुरक्षित बचपन देना है।

बदल गए बाल दिवस के मायने

आज बच्चों से मुखातिब होने का मतलब उन्हें केवल शिक्षा और पोषण तक सीमित रखना नहीं है बल्कि आज के बच्चों का एक्सपोजर-एआई, सोशल मीडिया, मोबाइल एडिक्शन, जलवायु संकट और करियर को लेकर तरह-तरह के दबावों से घिरा हुआ है। आज बचपन के चारों तरफ नई-नई चुनौतियां हैं, जिन्हें शायद आज के चार दशक पहले के बच्चे जानते तक नहीं थे। इसलिए साल 2025 में बाल दिवस का वही मतलब नहीं है, जो 1970 या 80 में हुआ करता था। आज बाल दिवस का मतलब बच्चों को सुरक्षित, स्वतंत्र और खुशहाल इंसान बनाने का सपना ही नहीं बल्कि उन्हें उचित अवसर देना भी है। इसलिए आज यह दिन बच्चों को याद करने का नहीं, उनकी दुनिया को बेहतर बनाने का दिन है। आज यह दिन हममें उनके भविष्य के निर्माण के प्रति चिंता पैदा करता है। नई सदी की नई चुनौतियों के अनुरूप आज बच्चों के बचपन को संजोने से आगे बढ़कर उन्हें भविष्य के अनुरूप इंसान गढ़ने का दिन है।

कई दबावों से घिरा है बचपन

पंडित नेहरू बच्चों को देश का भविष्य मानते थे। उनका सोचना था कि अगर बच्चों को सही दिशा में सोचने, सवाल करने और सीखने की आजादी मिले तो वे आपकी कल्पना से भी ऊंची उड़ान भर सकते हैं। लेकिन हमने आजादी के बाद के पिछले 80 सालों में बचपन को फलने-फूलने के लिए एक खुला वातावरण देने की बजाय आज के बच्चों को प्रेशर कुकर पीढ़ी बना दिया। आज दस साल का बच्चा भी अपने करियर की उस तरह चिंता करता है, जैसी चिंता आजादी के तुरंत बाद के दिनों में 40 साल के अधेड़ भी नहीं करते थे। उस जमाने में बचपन का मतलब होता था- खेलना, बेफिक्र होकर जीना और जीवन की असफलताओं से गुजरकर सफलता की ओर बढ़ना। लेकिन आज स्थिति एकदम बदल गई है। ऐसा माहौल बन गया है जैसे आज जीवन में असफलता के लिए कोई जगह ही नहीं है। आज की तारीख में दस-बारह साल के बच्चे एक नहीं कई-कई क्षेत्रों में पारंगत बनने के लिए वैसी गंभीर ट्रेनिंग लेते हुए मिल जाएंगे, जैसे कभी वयस्क लिया करते थे।

बच्चों के बीच न पनपे असमानता

डिजिटल युग में बचपन की बाधाएं बिल्कुल अलग हैं। आज 27 करोड़ बच्चे इंटरनेट से जुड़े हुए हैं। अब किताबों से पहले उनके हाथ में स्मार्ट मोबाइल होते हैं, जबकि दूसरी तरफ बड़ी संख्या में ऐसे भी बच्चे हैं, जिन्हें जीवन की बुनियादी सुविधाएं भी हासिल नहीं हैं। ऐसे में भला देश के सभी बच्चे एक तरह से कैसे आगे बढ़ सकते हैं? यहां स्मार्ट फोन रखने वाले बच्चे ऑनलाइन शिक्षा, कोडिंग, डिजाइन और उद्यमिता के भविष्य का पाठ अपनी स्कूल की पढ़ाई के दौरान ही पढ़ना शुरू कर देते हैं, वहीं करोड़ों गांवों, कस्बों के बच्चों के लिए ये पाठ उनकी जिंदगी शुरू हो जाने के बाद भी मुश्किल से शुरू हो पाता है। इसलिए जरूरी है कि किसी भी तरह से व्यवस्था करके भारत में बच्चों के बीच असमानता की इस बड़ी खाई को पाटना होगा। आज बड़े पैमाने पर नई पीढ़ी को यह समझाने की जरूरत है कि अब डिजिटल साक्षरता केवल तकनीकी नहीं बल्कि उस मोड़ पर आ गई है, जहां इसे नैतिक शिक्षा का भी हिस्सा बनना चाहिए। बच्चों को आज यह बताना जरूरी है कि डिजिटल माध्यम उनके अच्छे भविष्य को संवारने का साधन मात्र है, साध्य नहीं।

भविष्य के लिए करना होगा तैयार

आज बाल दिवस के मौके पर हम बच्चों को कोई चीज समझाने के लिए रटाने की जिद नहीं कर सकते बल्कि उन्हें समस्या का हल निकालने का मैथड समझाना होगा, साथ ही नैतिक निर्णय लेने की क्षमता भी उनमें भरनी होगी, ताकि वह भविष्य में सिर्फ रोजगार के क्षेत्र में ही सफल न हों बल्कि जीवन जीने के मामले में भी बेहद कामयाब हो सकें। आज बच्चों में पर्यावरणीय चेतना जगाना एक्स्ट्रा एक्टिविटी नहीं, न उनको विशेष बनाना है बल्कि यह जीने की जरूरी गतिविधि का हिस्सा है।

इसी तरह बच्चों में समानता और समावेशिता की सीख देना सिर्फ उन्हें बेहतर इंसान बनाने की कोशिश नहीं है बल्कि उन्हें आज की प्रतिस्पर्धात्मक दुनिया में योग्य बने रहने का जरूरी गुण है और याद रखिए, आज के बच्चों को न तो पूरी तरह से घर की जिम्मेदारी पर छोड़ा जा सकता है और न ही मां-बाप उन्हें बेहतर इंसान और सफल नागरिक बनाने की सारी जिम्मेदारी स्कूलों पर डाल सकते हैं। यह स्कूलों और घरों के साझे अभियान का समय है। अगर हम बच्चों को भविष्य का सफल और शिष्ट नागरिक बनाना चाहते हैं, तो उन्हें आगामी चुनौतियों के लिए तैयार करना होगा। तभी बाल दिवस मनाना भी सफल होगा। *

बच्चों के तनाव को करें दूर

साल 2024 के एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण के मुताबिक आज हर सात में से एक बच्चा किसी न किसी तरह के मानसिक तनाव से गुजर रहा है। मोबाइल युग के पहले ऐसा खतरा दूर-दूर तक नहीं होता था। आज बच्चों के सामने परीक्षा का डर, सोशल मीडिया की चिंता और माता-पिता की उम्मीदों की धुकधुकी उन्हें सहज नहीं होने देती। अगर हम बच्चों को भविष्य का स्वस्थ और सफल इंसान बनाना चाहते हैं, तो हमें उनके स्वास्थ्य को लेकर सहानुभूति से सुनने की सोच बदलनी होगी। स्कूलों में काउंसलिंग सेल, ओपन टॉक सेशन और इमोशनल लिट्रेसी प्रोग्राम लागू करने की बेहद जरूरत आन पड़ी है। आज बाल दिवस बड़ी शिद्दत से हमें याद दिलाता है कि बच्चों में भावनात्मक मजबूती, उनके सफल होने की बुनियादी शर्त है। साथ ही आज बदलते युग की जरूरतों में किसी न किसी कुशलता में दक्ष होना और अपनी गतिविधियों में वैल्यू एडिशन करने की क्षमता पाना भी जरूरी है। यह इसलिए जरूरी है, क्योंकि साल 2030 के बाद मशीनें सिर्फ मशीनें नहीं रहेंगी, वह इंसान से भौतिक प्रतिस्पर्धा करती नजर आएंगी। आने वाले दिनों में परंपरागत नौकरियां बदल जाएंगी। इसलिए आज की पीढ़ी को सीखना ही नहीं बहुत सतर्कता और सावधानी से अपनी क्रिएटिविटी और कोलेब्रेशन की क्षमता को भी साथ-साथ बढ़ाना है।

दायित्व
डॉ. अनिता राठौर

बचपन से किशोरावस्था तक बच्चों के जीवन में सबसे बड़ी भूमिका पैरेंट्स और टीचर्स की होती है। ऐसे में बच्चों के बेहतर, तनावरहित और उज्ज्वल भविष्य के लिए दोनों को उनकी जरूरतों और समस्याओं को गंभीरता से समझना होगा।

पैरेंट्स-टीचर्स जरूर समझें बच्चों की जरूरतें-समस्याएं

हर साल मनाए जाने वाले बाल दिवस का आशय हमें इस बात का एहसास भी कराना है कि कैसे आने वाले समय में बच्चे अपनी कल्पना, मासूमियत और संवेदनशीलता को बरकरार रखते हुए आगे बढ़ सकें? लेकिन सवाल है क्या आज अभिभावक और अध्यापक सचमुच बच्चों के रोजमर्रा की जरूरतों को समझते हैं? क्या तकनीक के बदलाव के इस दौर के बच्चों की जुबान और उनके मन पर तेजी से पड़ रहे प्रभावों को वो समय के अनुरूप समझ पा रहे हैं और इसको ध्यान में रखते हुए उनके विकास की जरूरत की भाषा बोल-समझ पा रहे हैं?

बदलें अपनी मानसिकता: जिस तरह से इंटरनेट, सोशल मीडिया, स्मार्ट क्लास, डिजिटल गेम्स और जूम्स गैदरिंग ने आज की समूची जीवनशैली को बदलकर रख दिया है, उस जीवनशैली को आज की एक दशक पुरानी भाषा से न तो समझा जा सकता है और न ही व्यक्त किया जा सकता है। लेकिन सवाल है, क्या आज भी कई दशक पुराने अध्यापक जो हमारी शिक्षा व्यवस्था की बागडोर अपने हाथों से संभाले हुए हैं, उन्हें डिजिटल युग के इन बच्चों की अभिव्यक्ति की भाषा समझ में आती है? क्या वे उन्हें उनके अनुरूप भाषा में जवाब दे पा रहे हैं? यह सिर्फ अध्यापकों के समक्ष का सवाल नहीं है। सच तो यह है कि यह बात अभिभावकों पर भी पूरी तरह से लागू होती है। आज के बच्चों का बचपन सिर्फ खेल के मैदान में नहीं बल्कि खेल के मैदान में कम, स्क्रीन की रोशनी के बीच ज्यादा बीतता है। लेकिन उनके अधिकांश अभिभावक साथ ही अध्यापक भी आज भी 90 के दशक की उस मानसिकता में अटके हुए हैं, जहां बच्चों से उम्मीद की जाती है कि वे किताबों में डूबे रहें, अपनी क्लास में सबसे ज्यादा नंबर लाएं, बड़ों की बातों को बिना सवाल किए मानें और घर में जब रिश्तेदार आएं तो उनके सामने वे अपने मां-बाप और रिश्तेदारों द्वारा पूछे गए हर सवाल का जवाब गर्दन नीची करके दें।

बदल गई बच्चों की मन:स्थिति: आज के बच्चों की मनःस्थिति बिल्कुल बदल गई है। सच तो यह है कि आज के तेज रफ्तार विकास और चमत्कारिक हो चली तकनीकी के इस युग में उनके मनो-मस्तिष्क में जिज्ञासाओं और आशंकाओं की तेज रफ्तार के अंधड़ चल रहे हैं। फिर भी अभिभावक हों या अध्यापक, उनसे 90 के दशक के बच्चों की तरह ही अनुशासन और आज्ञाकारिता की मांग करते हैं। मां-बाप और स्कूल टीचर बच्चों को आज भी पुराने खांचे और सांचे में ढाले रखना चाहते हैं। आज के मां-बाप और अध्यापक इस बात को समझ ही नहीं रहे कि तेजी से आ धमके डिजिटल युग ने किशोरों की समूची मानसिक संरचना को बदल कर रख दिया है। आज 14 से 16 साल के बच्चे न सिर्फ भविष्य के अपने करियर को लेकर चिंतित हैं बल्कि अपने लाइफस्टाइल को लेकर भी उन पर अभी से दबाव है।

आज के बच्चे 'डिजिटल नेटिव्स' हैं यानी, ऐसी पीढ़ी जो तकनीक के साथ पैदा हुई है और समझती है कि उन्हें डांटने और रोकने की इजाजत भी मां-बाप के पास नहीं होनी चाहिए।

समझें नए दौर के बच्चों की जरूरतें: एक बड़ी समस्या यह भी है कि आज अभिभावक अपने बच्चों की ज्यादातर जरूरतों को भौतिक रूप ही समझते हैं। जैसे- उनका स्कूल अच्छा होना चाहिए, उनके पास अच्छी क्वालिटी का मोबाइल होना चाहिए, वो प्रतिष्ठित कोचिंग सेंटर या ट्यूटर से कोचिंग पढ़ें और उनके कपड़े अच्छे से प्रेस (इस्त्री) होने चाहिए। मां-बाप भूल जाते हैं कि बच्चों की इन सब चीजों के अलावा भी जरूरतें हैं। उनकी भावनात्मक और मानसिक जरूरतें। लेकिन यह सिर्फ मां-बाप की ही कहानी नहीं है, आज के अध्यापक भी भूल जाते हैं कि उनके छात्र, उनसे टेक्नोलॉजी में कुशलता के अलावा जीवन की कठिन गांठों को सुलझाने की उम्मीद भी रखते हैं। आज के किशोरों के दिल की बात सुनने वाला कोई नहीं है, न स्कूल में अध्यापक, न घर में मां-बाप।

जी लेने दें बच्चों को बचपन: आज अभिभावकों और अध्यापकों को ठहरकर इन बातों पर गौर करना चाहिए। ऐसे संक्रमण काल में यह जरूरी है कि अध्यापक और अभिभावक दोनों ही बच्चों के दिल की आवाज को गंभीरता से सुनें। आज भी बच्चों को उनकी रुचियों के मुताबिक जीने और बचपने का आनंद लेने की छूट दी जानी चाहिए, जिसके लिए जरूरी है कि अभिभावक और अध्यापक दोनों ही आज के बचपने की भाषा को गंभीरता से समझें, तभी इस सब कुछ की संभावना वाले युग में बच्चों का बचपन शानदार और खुशियों से भरा होगा। *

गजल
प्रताप सोमवंशी

वो सारा दर्द छुप जाता था जो घर-बार के अंदर
वही दिखने लगा है आज-कल अखबार के अंदर

वो घर के एक बूढ़े की तरह सबसे निभाता है
मुसीबत छह दिनों की छुप गई इतवार के अंदर

ये रिश्ते तौलना, गिनना, उठाना, देखना, रखना
ये हम परिवार के अंदर हैं या बाजार के अंदर

वहां रिश्तों की खिड़की पर हैं कितने कीमती पर्दे
घुटन महसूस होती है मुझे दीवार के अंदर

किसी को भी कभी शीशे के जैसे मत समझ लेना
बहुत चुभता है जब टूटा है कुछ किरदार के अंदर

भलाई सिर्फ इतना चाहती है सौंपकर सबकुछ
बदल जाए कहीं दुनिया में कुछ दो-चार के अंदर

बहुत मजबूत होते हैं ये मजबूरी के कांधे भी
जो पूरा गांव ढो कर रख गए बाजार के अंदर

व्यंग्य / विनय मोघे

मोबाइल का बवाल

पिछले दिनों जब एक दूर के रिश्तेदार की मृत्यु का समाचार व्हाट्सएप पर आया तो ख्यालीराम के कांपते हाथों ने फूल की जगह तालियों के साथ बहुत बढ़िया प्रकट करने वाला इमोजी भेज दिया। उनकी इस गलती पर ग्रुप के बाकी लोग बहुत नाराज हुए।

सत्तर वर्षीय ख्यालीराम का परिवार चिंतित है, क्योंकि ख्यालीराम ने अन्न-जल त्याग देने की घोषणा कर दी है। कारण यह है कि घरवालों ने उनका मोबाइल उनसे ले लिया है। अब उनका फेसबुक, व्हाट्सएप सब बंद है। दुनिया से उनका संपर्क टूट गया है, इसीलिए उन्होंने अन्न-जल से अपना, संपर्क तोड़ लेने की ठान ली है।

दरअसल, कुछ महीने पहले ही उनके बेटे ने उनके जन्मदिन पर उन्हें अच्छा वाला स्मार्टफोन दिलाया था। उनके पौत्रों ने उनके मोबाइल पर कई सारे एप्स डाउनलोड कर दिए थे। ख्यालीराम की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। कांपते हाथों और कमजोर नजरों से ख्यालीराम उन एप्स का उपयोग करने लगे। बस यहीं से उनकी और उनके परिवार की परेशानी का सिलसिला शुरू हो गया।

पिछले दिनों जब एक दूर के रिश्तेदार की मृत्यु का समाचार व्हाट्सएप पर आया तो उनके कांपते हाथों ने फूल की जगह तालियों के साथ बहुत बढ़िया प्रकट करने वाला इमोजी भेज दिया। साथ ही में RIP की जगह दो बार PIP-PIP भी लिख दिया। उनकी इस गलती पर ग्रुप के बाकी लोग बहुत नाराज हुए थे। हर बर्थ-डे और एनिवर्सरी पर सेम गलती करते या उनसे कोई और गलती हो जाती है। केक के चित्र की जगह या तो दूध की बोतल वाला चित्र भेज देते या कुत्ते को दी जाने वाली हड्डी का। बधाई संदेशों को खुद टाइप नहीं कर पाते तो कॉपी पेस्ट कर दिया करते। ऐसे में कभी एनिवर्सरी के उनके संदेश में अकसर पति-पत्नी की जोड़ी बदल जाती थी। पतियों को शायद उनका ऐसा करना अच्छा लगता हो पर पत्नियां नाराज हो उठती थीं। उनकी गलतियों से बचने के लिए उनके दोनों पौत्रों ने उन्हें वॉइस मैसेज भेजने का आइडिया सुझाया। एक बर्थ-डे पर उन्होंने जो वॉइस मैसेज भेजा, जिसमें सिर्फ उनके खांसने की आवाज और दो बार 'हे राम, ये खांसी तो मार ही डालेगी मुझे।' सुनाई दिया। पूरे मैसेज में बर्थ-डे का जिक्र कहीं नहीं हुआ।

फेसबुक पर अपने पुराने मित्रों, सहेलियों को ढूंढने के चक्कर में उनके नाम से मिलते-जुलते नाम वाले कई लोगों को अपना मित्र बना लिया था। कुछ ही दिनों में उनके मित्रों की कुल संख्या सैकड़ा पार कर गई थी, जिनमें असली मित्र बहुत ही कम थे। कांपते हाथों और कमजोर नजरों के कारण उनके फेसबुक मित्रों की संख्या में बेतहाशा बढ़ोतरी हो रही थी। एक दिन किसी ऑनलाइन शॉपिंग एप पर उनके कांपते हाथों और कमजोर नजरों के कारण 43 इंच एलईडी टीवी ऑर्डर हो गया, वो भी 'कैश ऑन डिलीवरी।' जिस दिन यह घटना हुई, उसी दिन घरवालों ने उनसे मोबाइल वापस ले लिया। मोबाइल के आदी हो चुके ख्यालीराम अब अन्न-जल के बिना रह सकते हैं पर मोबाइल के बिना नहीं। घरवाले सोच रहे हैं, उन्हें अन्न-जल दें या मोबाइल? *

एआई इमेज

लघुकथा / बालकृष्ण गुप्ता 'गुरु'

बड़ा आदमी

सुभाष के बारह वर्षीय बेटे राहुल ने मचलते हुए कहा, 'पापा, मुझे बड़ा आदमी बनना है।'

'इस सीढ़ी पर चढ़कर बैठ जा।' सुभाष ने दीपावली की सफाई के लिए निकाली गई सीढ़ी की ओर इशारा करते हुए मजाकिया ढंग से कहा।

राहुल भी हंसी-हंसी में सीढ़ी के तीन डंडों पर चढ़कर ऊपर बैठ गया।

पिता ने पहले अपने और फिर उसके सिर पर हाथ ले जाते हुए बताया, 'देखो, अब तुम मुझसे भी बड़े हो गए। ध्यान दो, तुम एक-एक सीढ़ी चढ़ते हुए बड़े बने हो।'

राहुल ने शिकायती लहजे में कहा, 'ऐसे नहीं, मुझे सचमुच का बड़ा आदमी बनना है।'

'इसके लिए तुम्हें अपने ही आस-पास के किसी बड़े आदमी को ढूंढना होगा, उसके समीप रहना होगा और फिर उसके जैसा बनने की कोशिश भी करनी होगी।'

राहुल ने सवाल किया, 'लेकिन कोई बड़ा आदमी है, मैं कैसे पहचानूंगा?'

'हां, यह समस्या तो है। पहले के समय में पहचान का तरीका अलग था। कोई सज्जन होता था, ज्ञानी होता था, समाज के हित के लिए काम करता था तो उसे बड़ा आदमी माना जाता था। आज के जमाने में किसी व्यक्ति के आस-पास के लोगों को व्यवहार देखकर यह जाना जाता है।' सुभाष ने बताया।

'उस व्यक्ति के बजाय उसके आस-पास के लोगों का व्यवहार देखकर पहचाना जाएगा कि वह कितना बड़ा आदमी है?' राहुल ने आश्चर्य से पूछा।

'हां!' पिता सुभाष ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, 'कोई आदमी कहीं पहुंचे तो उसे आता देखकर वहां बैठे सारे लोग खड़े हो जाएं, वह आकर बैठ जाए तो सभी बैठ जाएं, वह आदमी चलने के लिए उठकर खड़ा हो तो शेष लोग भी खड़े हो जाएं, उसे छोड़ने बाहर तक जाएं, तब समझो कि वह बड़ा आदमी है।' *

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

जीने का रास्ता दिखाती कहानियां

समय के साथ बहुत कुछ बदल गया है। इस बदलाव की सबसे बड़ी मार परिवार, रिश्ते, नाते और हमारी संवेदनाओं पर पड़ी है। हर किसी की जिंदगी में हर दिन कुछ ना कुछ टूट रहा है, बिखर रहा है। तकनीक की तरक्की ने दूरियों को और बढ़ाने का काम किया है। इन्हीं दूरियों, बिखराव और भटकाव के बीच जीने का रास्ता तलाशती हैं 'पा की डायरी' की कहानियां। इस पुस्तक की लेखिका आशा शर्मा हैं। लेखिका अपनी इन कहानियों में एक स्वप्न बुनती हैं। स्वप्न जिसमें परिवार का साथ, रिश्तों में नमी व स्त्री की स्वतंत्रता हो। शीर्षक कहानी 'पा की डायरी' दांपत्य प्रेम की अनूठी बानगी है। एक डायरी जो जीवन भर पत्नी को परेशान करती रही। पति के मृत्यु के बाद उसका रहस्य खुलता है, जो पत्नी को हैरान कर देता है। 'दिमाग वाली लड़की' आज की आत्मचेता स्त्री के स्वाभिमान की कहानी है। 'अधबुना स्वेटर' में लेखिका ने रिश्तों की गर्माहट की बड़ी आत्मीय कहानी लिखी है। 'प्रतिरूप', 'पिघलती बर्फ', 'जी ले जरा' आदि कहानियां भी जीवन के उतार-चढ़ाव को खूबसूरती से उकेरती हैं। कह सकते हैं कि ये आज के जटिल समय की कहानियां हैं। मगर लेखिका ने इसे बड़े सरल तरीके से लिखा है। बिल्कुल सुलझे अंदाज में। *

पुस्तक: पा की डायरी (कहानी संग्रह), **लेखिका:** आशा शर्मा, **मूल्य:** 260 रुपए, **प्रकाशक:** समृद्ध पब्लिकेशन, दिल्ली

सेलिब्रेशन / शिखर चंद जैन

अपने भारत देश में तो बाल दिवस 14 नवंबर को मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ प्रत्येक वर्ष 20 नवंबर को बाल दिवस मनाता है। लेकिन दुनिया के तमाम देशों में अलग-अलग महीनों/दिनों में बाल दिवस अनोखे अंदाज में मनाया जाता है। इनमें से कुछ देशों में कैसे मनाते हैं बाल दिवस, जानिए।

दुनिया भर में मनाते हैं बाल दिवस

बच्चों को पूरी दुनिया में प्यार किया जाता है। यही वजह है कि दूसरे दिवस भले ही दुनिया में हर जगह न मनाए जाते हों लेकिन चिल्ड्रेंस-डे दुनिया के लगभग हर देश में मनाया जाता है। दिलचस्प बात यह है कि साल के हर महीने में कहीं ना कहीं चिल्ड्रेन-डे मनाया जाता है। दुनिया भर में 90 से ज्यादा देशों में बच्चों के सम्मान में एक समर्पित राष्ट्रीय अवकाश है। इस अवकाश को बाल दिवस के नाम से जाना जाता है। आइए जानते हैं, दुनिया के कुछ देशों में कैसे मनाते हैं बाल दिवस-

कोडोमो नो हि जापान

जापान में, बाल दिवस हर वर्ष 5 मई को मनाया जाता है। सन 1948 से यह राष्ट्रीय अवकाश है। इसे दो त्योहारों के रूप में मनाया जाता था, टैंगो नो सेक्कु (लड़कों का दिन) और हिनामात्सुरी (लड़कियों का दिन)। जापान में बाल दिवस मनाने का सबसे प्रसिद्ध तरीका काबूतो और गोगात्सु-निंग्यो जैसे पारंपरिक आभूषणों को प्रदर्शित करना होता है। काबूतो एक पारंपरिक समुराई हेलमेट है, जो अकसर सबसे सुंदर सजावट के साथ होता है। गोगात्सु-निंग्यो कवच और जापानी तलवार से सुसज्जित जापानी योद्धा गुड़िया का प्रतीक है। लोग उन्हें घर पर प्रदर्शित करते हैं। 'कोडोमो नो हि' यानी बाल दिवस जापान में एक राष्ट्रीय अवकाश है। कोइनोबोरी नामक रंगीन झंडे उत्सव के विशेष प्रतीक हैं, जिन्हें इस दिन घरों के बाहर खंभों पर लटकाए जाते हैं। जापानी में, कोइ का मतलब कार्प होता है। यह एक प्रकार की मछली है, जो शक्ति और दृढ़ता का प्रतीक है और नोबोरी का मतलब है ऊपर उठना। बाल दिवस के अवसर पर टोक्यो के राष्ट्रीय कासुमीगाओका स्टेडियम में बच्चों का ओलंपिक भी आयोजित किया जाता है, जिसमें हजारों बच्चे और उनके अभिभावक दौड़ में भाग लेते हैं।

डिया डेल निनो मेक्सिको

मेक्सिको में बाल दिवस की शुरुआत सन 1925 में हुई थी। इस उत्सव की शुरुआत अल्वारो ओब्रेगॉन के राष्ट्रपति काल के दौरान हुई थी, जब प्रथम विश्व युद्ध से प्रभावित यहां के कमजोर बच्चों के कल्याण की योजनाएं बनाई जा रही थीं। मेक्सिको में बाल दिवस 30 अप्रैल को मनाया जाता है। इस दिन बच्चे स्कूल जाते हैं, लेकिन रेग्युलर क्लास नहीं चलती। सारा दिन खेल खेलने, पिनाटा बनाने और तोड़ने, संगीत का आनंद लेने और बहुत सी मजेदार एक्टिविटीज करने में व्यतीत होता है। स्कूल के बाद, परिवार अपने बच्चों को संग्रहालयों, सिनेमाघरों और चिड़ियाघरों जैसी जगहों पर घुमाने ले जाते हैं, जहां आमतौर पर उस दिन बच्चों के लिए निःशुल्क प्रवेश होता है। कुछ रेडियो और टेलीविजन प्रोग्राम होस्ट करने वाले बच्चों को अपने शो में बुलाते हैं।

यूरिनी नाल, दक्षिण कोरिया

दक्षिण कोरिया में बाल दिवस पर्व को राष्ट्रीय अवकाश होता है। इस दिन आयोजित होने वाले समारोहों में परेड, तमाशा, पार्टियां, पिकनिक और ताइक्वांडो प्रदर्शन शामिल हैं। इस सूची में पर्वतीय पद यात्राएं, नदी किनारे तंबू लगा कर रहने और मौज मस्ती करने जैसी गतिविधियां भी शामिल हैं। इस मौके पर बच्चे पारंपरिक कपड़े पहनते हैं और परिवार के साथ संग्रहालयों, पार्कों में मस्ती करने और फिल्म देखने जाते हैं। कई जगहों पर इस खास दिन के लिए बच्चों को निःशुल्क प्रवेश दिया

जाता है। इस दिन बच्चे दक्षिण कोरियाई शिल्प की वस्तुएं बनाते हैं, जैसे कि हाथ में पकड़ने वाला सोगो ड्रम, कमल का लालटेन या सैम ता, गुक पंखा। इस अवसर पर चावल से बने कोरियाई व्यंजन, पारंपरिक खाद्य पदार्थ जैसे मांडू (मांस और सब्जियों से बना पकौड़ा) कुजुलपैन (पैनकेक के अंदर लपेटे गए मांस और सब्जियों के स्ट्रिप्स), सोलोंगटैंग, चावल के केक जो आधे-चंद्रमा के आकार के होते हैं आदि का लुत्फ भी उठाया जाता है।

लिउयी गुओजी एर्तोंग जिए चीन

चीन में बाल दिवस सन 1949 से मनाया जा रहा

है। यहां इसे हर वर्ष 1 जून को मनाया जाता है। कुछ स्कूलों में, इसे बच्चों को समर्पित विशेष प्रदर्शनों के साथ मनाया जाता है। कई पर्यटक केंद्रों पर इस दिन बच्चों के लिए प्रवेश पर कुछ छूट दी जाती है या पूरी तरह से निःशुल्क प्रवेश दिया जाता है। चीन में इस दिन अधिकतर परिवार अपने बच्चों के साथ समय बिताते हैं और पसंदीदा भोजन बनाते, खाते हैं।

ते रा ओ नगा तामारिकी न्यूजीलैंड

न्यूजीलैंड में बाल दिवस को 'ते रा ओ नगा तामारिकी' के नाम से जाना जाता है और यह हर साल मार्च के पहले रविवार को मनाया जाता है।

इस दिन वहां पूरे देश में मजेदार सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इनमें खेल, कार्निवल की सवारी, भोजन, पारंपरिक हाका नृत्य और बहुत कुछ शामिल होता है।

अपने देश में मनाते हैं चाचा नेहरू का जन्मदिन

हमारे देश में 14 नवंबर को देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के जन्मदिन को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। वे बच्चों में चाचा नेहरू के नाम से लोकप्रिय थे। इससे पहले सन 1964 तक बाल दिवस 20 नवंबर को मनाया जाता था। दरअसल, सन 1954 में संयुक्त राष्ट्र ने 20 नवंबर को बाल दिवस के तौर पर मनाने का ऐलान किया था, जिसके चलते हर साल 20 नवंबर को ही बाल दिवस मनाया जाता था। लेकिन 1964 में जवाहर लाल नेहरू के निधन के बाद बाल दिवस भारत में 14 नवंबर को मनाया जाने लगा। इस दिन बच्चों के लिए सभी स्कूलों में मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। उन्हें तरह-तरह के खेल खिलाए जाते हैं और गिफ्ट भी दिए जाते हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में कई जगह राज्य सरकारें भी अपने स्तर पर बच्चों के लिए कार्यक्रम आयोजित करती हैं।

बिहार के सोनपुर में सदियों से लगने वाले पशु मेले की वैश्विक ख्याति और इसका आकर्षण बरकरार है। आज से शुरू हो रहा यह मेला 10 दिसंबर तक चलेगा। इस मेले की खासियतों पर एक नजर।

बरकरार है सोनपुर मेले का आकर्षण

सांस्कृतिक उत्सव
धीरज बसाक

आज का दौर इंटरनेट, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, डिजिटल पेमेंट और ई-कॉमर्स का है। यहां तक कि लोग अब पालतू पशुओं की खरीदारी के लिए भी ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करते हैं। ऐसे समय में भी बिहार का सोनपुर पशु मेला सदियों से न सिर्फ आज भी लग रहा है बल्कि उसका पहले की तरह आकर्षण भी बरकरार है, जो इस मेले की आर्थिक और सांस्कृतिक महत्ता को खुद ही बखान कर रहा है।

लोकजीवन की जड़ों से जुड़ा मेला: सोनपुर का पशु मेला न केवल पशुओं की खरीद-फरोख्त की दृष्टि से एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला है बल्कि यह धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और पारिस्थितिकी दृष्टि से भी विशिष्ट आयोजन है, जिसकी चमक सदियों से बरकरार है। इस मेले में पशुओं का व्यापार तो

होता ही है, अपितु यह भक्ति, संस्कृति और लोक परंपराओं का भी महाकुंभ है। यह मेला बिहार ही नहीं, पूरे भारत की ग्रामीण आत्मा और उसकी जीवनशैली का प्रतिनिधित्व करता है।

सदियों से लग रहा मेला: सोनपुर के पशु मेले का इतिहास 2,000 साल पुराना है। माना जाता है कि कृषि एवं अन्य कार्यों के लिए उपयोगी पशुओं की खरीद-बिक्री यहां मौर्य काल से होती आ रही है। गंगा और गंडक नदियों के संगम पर सोनपुर में लगने वाला यह मेला अपने पीछे कई पौराणिक आख्यानों की थाती समेटे हुए है, तो ग्रामीण जीवन की परंपरा का सबसे विश्वसनीय स्रोत भी है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार: सोनपुर का पशु मेला भारत की पारंपरिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक बड़ा केंद्र है। इस मेले में गाय, भैंस, बैल, घोड़े, ऊंट और हाथी बिकते हैं। कभी यह एशिया का सबसे बड़ा हाथी बाजार हुआ करता था। हालांकि आज यह हाथी बाजार बहुत छोटा और विरासत के रूप में ही मौजूद है। यह मेला स्थानीय किसानों और पशु पालकों के लिए कमाई का एक बड़ा अवसर होता है। हाल के सालों में बिहार सरकार ने इसे 'एग्रीकल्चर एंड लाइवस्टॉक केयर' के रूप में विकसित किया है।

परंपरा का डिजिटलीकरण: सोनपुर पशु मेला अब भौतिक रूप में तो लगता ही है, इसका एक बड़ा और व्यापक डिजिटल संस्करण भी मौजूद है। बिहार पर्यटन विभाग की वेबसाइट, सोशल मीडिया एकाउंट और ऑनलाइन बुकिंग सुविधाओं के जरिए देशभर के लोग इस मेले से न केवल डिजिटल दुनिया में रू-ब-रू होते हैं बल्कि वो डिजिटल तरीके से खरीद-फरोख्त भी करते हैं। एक तरह से यह डिजिटल और पारंपरिक लोकजीवन का संगम बन गया है।

लोक-संस्कृति की झलक: इस मेले में देश-विदेश के लाखों पर्यटक, किसान और व्यापारी सिर्फ घूमने, खरीदने-बेचने के लिए ही नहीं आते, बल्कि इस मेले की सांस्कृतिक आत्मा को जीने के लिए भी आते हैं। इस सदियों पुराने पशु मेले में आज भी हर तरफ लोक-नृत्यों, लोकगीतों, नुक्कड़ नाटकों, हस्तशिल्प और लोकभोजनों का खुशबू भरा आकर्षण मौजूद होता है। वास्तव में इस मेले में आकर हम एक ऐसे ग्रामीण भारत से रू-ब-रू होते हैं, जिसकी चमक और खनक आज भी पूरी दुनिया को अपनी तरफ आकर्षित करती है। विदेशी पर्यटकों के लिए तो यह पशु मेला भारत की ग्रामीण संस्कृति का 'ओपन एयर म्यूजियम' की तरह है। बिहार सरकार सोनपुर मेले को हेरिटेज टूरिस्ट प्लेस के रूप में भी प्रमोट करती है, जिससे स्थानीय लोगों की आय में इजाफा होता है और वैश्विक स्तर पर भारत की सांस्कृतिक पहचान मजबूत होती है।

सामाजिक-सांस्कृतिक जुड़ाव का अवसर: सोनपुर का मेला सिर्फ व्यापार मेला नहीं बल्कि विभिन्न समुदायों के मिलने-जुलने,

रिश्ते बनाने और अनुभव साझा करने का मंच भी है। इसलिए ग्रामीण समाज में यह मेला सामाजिक बंधन और लोकसंवाद की परंपरा को भी प्रोत्साहित करता है। आज जब पूरी दुनिया में वर्चुअल आयोजनों की भरमार है, ऐसे समय में सोनपुर का यह लोक मेला वास्तविक सामाजिक जुड़ाव का अनुभव देता है। यहां किसान, व्यापारी, शिल्पकार, संगीतकार और लोक-कलाकार सब मिलकर आम नागरिक जीवन की सतरंगी तस्वीर पेश करते हैं। यही वजह है कि आज के इस डिजिटल युग में भी सदियों से आयोजित हो रहे सोनपुर के पशु मेले का आकर्षण जरा भी कम नहीं हुआ है।

गाइडेंस
कीर्तिशेखर

किसी एक उम्र तक ही सीरियस होकर सफल करियर नहीं बनाया जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि हर एज की जरूरत के अनुसार करियर को सही दिशा दी जाए।

सक्सेसफुल करियर के लिए हर एज में सीरियस होना जरूरी

जीवन में कामयाब करियर हासिल करने के लिए सही समय क्या होता है, जब हमें इसके लिए गंभीर हो जाना चाहिए? इसके अलग-अलग जवाब हो सकते हैं। अगर हमें जीवन में अपने कामयाब करियर के लिए सजग रहना है तो जिंदगी के अलग-अलग पड़ावों में अलग-अलग तरह की सजगता बहुत जरूरी है ताकि उनके साझे नतीजे में हमारा शानदार-कामयाब करियर बने।

स्कूल टाइम (10 से 16 साल): यह वह उम्र होती है, जब कोई भी छात्र अपनी पढ़ाई, पढ़े जाने वाले विषय और उन विषयों में अपनी रुझान पहचानना शुरू करता है। इस उम्र में भविष्य के कामयाब करियर के लिए सजग हो जाना जरूरी है। क्योंकि उसी के मुताबिक आपको आगे अपने पढ़े जाने वाले विषयों की स्ट्रीम (आर्ट, कॉमर्स, साइंस) तय करना होता है और जिसमें बेहतर रुझान होता है, उसी दिशा में आगे करियर विकल्प पर फोकस करना होता है। इसलिए इस उम्र में जरूरी है- पढ़ने की आदत और अनुशासन विकसित करना। आप अपनी स्ट्रीम के मुताबिक अपनी रुचि को पहचानिए और उसे उस समय के हिसाब से विकसित करने की कोशिश करें। क्योंकि उम्र का यही वह पड़ाव होता है, जब हमारे जीवन के कामयाब करियर की नींव पड़ती है।

कॉलेज/स्नातक (16 से 23 साल): करियर के लिए हमारी जिंदगी में असली और सर्वाधिक सीरियस होने का यही समय होता है, क्योंकि इसी

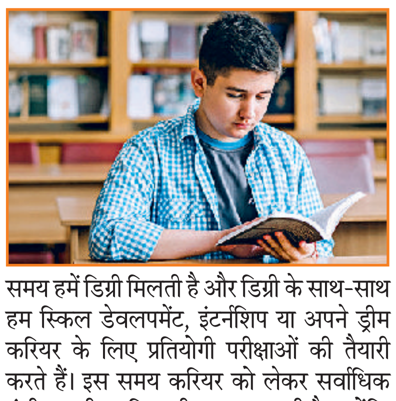

समय हमें डिग्री मिलती है और डिग्री के साथ-साथ हम स्किल डेवलपमेंट, इंटर्नशिप या अपने ड्रीम करियर के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं। इस समय करियर को लेकर सर्वाधिक गंभीरता की इसलिए भी जरूरत पड़ती है, क्योंकि इस उम्र में हममें सबसे ज्यादा ऊर्जा होती है। इसी उम्र में हमारे पास असफल होकर दोबारा से नए सिरे से करियर शुरू करने का हौसला रहता है।

युवावस्था (23 से 30 साल): यह करियर शुरू हो जाने के बाद उसे स्थिरता प्रदान करने का समय होता है। क्योंकि अब वास्तव में करियर शुरू हो चुका होता है और उसे मजबूत और स्थिर बनाना हमारे हाथ में होता है। इसलिए इस उम्र में हमें

ज्यादा से ज्यादा अपने करियर के इस मोड़ पर फोकस करना चाहिए। उम्र के इस पड़ाव पर हमें सिर्फ करियर के लिए पढ़ाई पर ही ध्यान नहीं देना होता बल्कि नेटवर्किंग, अनुभव और सही अवसर पकड़ने की कोशिश पर होता है। क्योंकि अगर 23 से 30 के बीच हमारे करियर की दिशा अच्छी तरह से तय हो गई, तय होने के साथ-साथ इस दिशा में अगर हमने अपने आपको मजबूती से जमा लिया, तो आगे विकास और पदोन्नति आसान हो जाती है। यही वह उम्र है, जब हम एक करियर में रहते हुए इनकी मजबूती से तैयारी करते हैं। इसी उम्र में स्टार्टअप शुरू करना, अपने विषय विशेष पर रिसर्च करना या जॉब के साथ फ्रीलांसिंग के

अवसर पकड़ना होता है। इसलिए उम्र का यह पड़ाव भी करियर के लिहाज से इंपॉर्टेंट होता है।

स्थिरता-विकास (31 से 40 साल): 31वें साल से लेकर 40वें साल तक हम अपने करियर को स्थिरता प्रदान करते हुए उच्च विकास की ओर आगे बढ़ते हैं। इस दौरान कई बार हमें पीएचडी की पढ़ाई करनी होती है। जॉब में लीडरशिप पाने के लिए मैनेजमेंट कोर्स या इंटरनेशनल सर्टिफिकेशन की पढ़ाई करनी होती है। कुल मिलाकर इस उम्र में हम अपने करियर को मजबूती देकर विशेषज्ञता की ओर बढ़ते हैं और नेतृत्व हासिल करते हैं। इसलिए करियर के लिहाज से उम्र का यह पड़ाव हमारे लिए महत्वपूर्ण होता है कि इस समय तक हमारे क्षेत्र विशेष में हमारी प्रोफेशनल पहचान बनने लगती है और हममें अपने क्षेत्र में स्थिरता हासिल करना जरूरी हो जाता है।

अनुभव का पूंजीकरण (40 साल के बाद): उम्र के इस पड़ाव में हमें अपनी अब तक की मेहनत के कई सुफल मिलते है। लेकिन कई बार हमें इस उम्र में अपना टेक्नोलॉजी स्किल बदलने नए सिरे से अपनी पढ़ाई में कुछ और जोड़ना होता है। इसके लिए भी तैयार रहना चाहिए।

सिने ट्रेंड / डी. जे. नंदन

जरूरी नहीं कि जिस फिल्म का बजट ज्यादा होगा, उसका बॉक्स ऑफिस कलेक्शन भी जानदार होगा। कई बार लो बजट में बनी फिल्में भी कमाई के मामले में कमाल कर जाती हैं। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में बनी कुछ ऐसी फिल्मों पर एक नजर।

बजट रहा लो-किया हाई कलेक्शन

इस साल भारतीय सिनेमा में बड़े बजट की फिल्मों ने ही नहीं बल्कि छोटे बजट की अच्छी कहानियों पर बनी फिल्मों ने भी कमाल कर दिखाया। कम बजट में बनने वाली कई फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर शानदार कमाई तो की ही, फिल्म की कहानी और संगीत ने भी लोगों के दिलों को छुआ। मतलब साफ है, अब दर्शक ऐसी फिल्में देखना पसंद करते हैं, जिसकी कहानी उनके दिल को छू जाए और उन्हें एकबारगी सोचने पर मजबूर कर दे।

कम बजट में बड़ी सफलता: इस साल महज 45 करोड़ रुपए के बजट से बनी, फिल्म 'सैयारा' 500 करोड़ रुपए से अधिक का बिजनेस चुकी है। इस फिल्म की सफलता ने यह साबित कर दिया है कि दर्शकों को बड़े-भव्य सेट्स और महंगे लोकेशन वाली फिल्में ही नहीं, अच्छी कहानी और अच्छे संगीत पर आधारित फिल्में भी खूब पसंद आती हैं। न्यू कमर्स अहान पांडे और अनीता पड्डा को इस फिल्म ने रातों-रात स्टार बना दिया। 'सैयारा' से पहले विकी कौशल की फिल्म 'छावा' ने वर्ल्डवाइड लगभग 808 करोड़ रुपए की कमाई की थी। महज 90 करोड़ रुपए के बजट में बनी 'छावा' साल 2025 की सबसे अधिक कमाई करने वाली हिंदी फिल्म बनी।

आमिर खान की 'सितारे जमीं पर' ने भी बेहतर प्रदर्शन किया है, जिसने लगभग 300 प्रतिशत का मुनाफा कमाया। राजकुमार राव अभिनीत 'भूलचूक माफ' महज 45 करोड़ रुपए के बजट से बनी, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर इस फिल्म ने 90 करोड़ रुपए से भी ज्यादा की कमाई की थी।

बड़े बजट के बावजूद नहीं मिली सफलता: इस साल बड़े बजट की कई फिल्मों को लेकर कयास लगाए जा रहे थे कि वो बॉक्स ऑफिस पर बड़ी हिट साबित होंगी। लेकिन इन बिग बजट फिल्मों ने निराश ही किया। अक्षय कुमार की 'स्काई फोर्स' खास कमाई नहीं कर पाई। सनी देओल की 'जाट' उम्मीद से काफी कम चली। सलमान खान की फिल्म 'सिकंदर' भी कुछ खास कमाल नहीं कर पाई। शाहिद कपूर की फिल्म 'देवा', जो की मलयालम फिल्म की रीमेक है, नहीं चल पाई। कंगना रानोट की 'इमरजेंसी' से भी सफलता दूर ही रही। मल्टी स्टारर फिल्म 'हाउस फुल-5' अपना बजट निकालने में तो कामयाब रही, लेकिन फिल्म उम्मीद के मुताबिक मुनाफा नहीं कमा पाई।

'सैयारा' को मिली शानदार सफलता

'हाउसफुल 5' का उम्मीद से कम रहा कलेक्शन

अन्य भारतीय भाषाओं की सफल फिल्में: हिंदी के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं में बनी फिल्मों पर नजर डालें तो क्षेत्रीय भाषाओं में बनी कई लो बजट फिल्मों ने कमाल की सफलता पाई। तमिल फिल्मों की बात करें तो सिर्फ 7 करोड़ रुपए के मामूली बजट में बनी तमिल फिल्म 'टूरिस्ट फैमिली' ने दुनियाभर में 100 करोड़ रुपए से अधिक की कमाई की है। यह फिल्म पांच सप्ताह तक लगातार बॉक्स ऑफिस पर अपनी पकड़ बनाए रखने में कामयाब रही। बजट और कलेक्शन के अनुपात और व्यूअरशिप को देखते हुए इसे साल 2025 की सबसे सफल तमिल फिल्म कहा जा सकता है।

साल की सबसे सफल फिल्मों में शामिल 'छावा'

तमिल भाषा में ही 35 करोड़ रुपए के बजट से बनी 'ड्रैगन' ने 150 करोड़ रुपए से अधिक की कमाई की। 'माधा गज राजा' फिल्म सिर्फ 15 करोड़ रुपए में बनी और इसने 60 करोड़ रुपए की कमाई की। ऐसे ही तमिल फिल्म 'मामन' का बजट 10 करोड़ रुपए था और फिल्म ने 55 करोड़ रुपए की कमाई की।

मलयालम में बनी फिल्म 'थुडारम' ने बॉक्स आफिस पर बेहतरीन प्रदर्शन किया। लगभग 50 करोड़ रुपए के बजट वाली इस फिल्म ने 235 करोड़ रुपए के आस-पास कमाई की। मलयालम भाषा की ही फिल्म 'रेखा चित्रम' सिर्फ 10 करोड़ रुपए के बजट से बनी थी। फिल्म ने उम्मीद से ज्यादा लगभग 60 करोड़ रुपए की कमाई की। ऐसे ही 'अलप्पाबुझा जिमखाना' 12 करोड़ रुपए के बजट से बनी और लगभग 70 करोड़ रुपए की कमाई की।

तमिल फिल्म 'टूरिस्ट फैमिली' ने किया कमाल

तेलुगू भाषा की फिल्म 'संक्रांतिकी वस्थुनम' 50 करोड़ रुपए के बजट से बनी और फिल्म ने लगभग 260 करोड़ रुपए की कमाई की।

दर्शकों को प्रभावित करती है कहानी: छोटे बजट की इन भारतीय फिल्मों के बॉक्स ऑफिस पर शानदार प्रदर्शन यह संकेत करता है कि फिल्म का बजट और स्टारकास्ट भले ही मायने रखते हैं, लेकिन फिल्म की कहानी और उसकी प्रस्तुति भी दर्शकों को खींचने और उन्हें बांधे रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बड़े बजट की फिल्मों का कम चलना और लो बजट फिल्मों का शानदार प्रदर्शन निर्माता-निर्देशकों के लिए भी सबक है कि वे स्टार पावर के अलावा कहानियों और उसके प्रस्तुतिकरण पर भी ध्यान दें। भले ही कम बजट में फिल्में बनाएं, लेकिन अच्छी फिल्में बनाएं।

'सितारे जमीन पर' ने भी की बढ़िया कमाई